Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ

(सूरः अन्फ़ाल : 30)

अनुवाद : हे लोगों जो ईमान लाए हो ! यदि तुम अल्लाह से डरो तो वह तुम्हारे लिए एक अंतर करने वाला निशान बना देगा और तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देगा और तुम्हें क्षमा कर देगा और अल्लाह सब से अधिक फ़ज़ल करने का मालिक है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 9
अंक 6

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

27 रजब 1445 हिज्री कमरी, 08 तब्लीग़ 1403 हिज्री शम्सी, 08 फ़रवरी 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

"इस लड़ाई में जबकि बड़ा सदमा मुस्लमानों को पहुंचा और अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो की सिपाह की ग़ल्ती से विपत्ति आई परंतु एक बड़ा लाभ भी प्राप्त हुआ कि मुनाफ़िक़ों का दुश्मनी और यहूदियों का द्वेष और क्रोध साफ़-साफ़ स्पष्ट हो गया और ख़ालिस मुस्लमान प्रमुख हो गए।" (हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हो)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सख्त आदेश के बावजूद भी जब दर्रे की हिफ़ाज़त पर निर्धारित अधिकतर ने दर्रा ख़ाली कर दिया तो दुश्मन ने इस तरफ़ से हमला किया और मुस्लमानों को नुक़्सान पहुंचाया

सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में इस दुनियावी ख़ाहिश के लिए दर्रे को छोड़ने की बात दिल को लगती नहीं सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में यह कहना बल्कि सोचना भी उनकी शान के ख़िलाफ़ है कि उनको माल-ए-ग़नीमत की पड़ी होती थी

अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो की आख़िरत पर नज़र थी कि वे रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रज़ा में सबसे बड़ी कामयाबी देखते थे। अतः वे ये चाहते थे कि अंततः मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अल्लाह राज़ी रहे और यह वक़्ती तौर पर जो चीज़ें दिखाई दे रही हैं बिल्कुल बेमानी और बे-हक़ीक़त हैं। हमारी असल नेकी उनकी रज़ा प्राप्त करना है

मुस्लमान उस वक़्त बे-ख़बरी के आलम में माल-ए-ग़नीमत जमा करने और मुशरेकीन को क़ैदी बनाने में व्यस्त थे कि अचानक मुशरिकों के घुड़सवार दस्ते घोड़े दौड़ाते हुए उनके सिरों पर पहुंच गए

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के क़तल की सूचना मिली तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सख़्त सदमा हुआ और रिवायत आती है कि ग़ज़व-ए-तायफ के बाद जब हम्ज़ा का क़ातिल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे माफ़ तो फ़र्मा दिया परंतु हम्ज़ा की मुहब्बत का सम्मान करते हुए फ़रमाया कि वहशी मेरे सामने आया कर

अल्लाह ने आग पर हमेशा के लिए हराम कर दिया है कि हम्ज़ा के गोश्त में से भी चखे

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जिब्राईल ने आकर मुझे ख़बर दी है कि हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्लिब को सात आसमानों में अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का शेर लिखा गया है

ग़ज़व-ए-उहद के दौरान सय्यदुल शोहदा हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत तथा अन्य आने वाले हालात-ओ-वाक़ियात का वर्णन, फ़लस्तीन के मज़लूमों के लिए दुआ की पुनः तहरीक

मुस्लमान मुल्कों को ही अल्लाह तआला हिम्मत दे कि अपनी आवाज़ में ज़ोर पैदा करें और हक़ीक़त में एक बन कर इस ज़ुलम के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाएं और इस को ख़त्म करने की कोशिश करें

श्रीमान शेख़ अहमद हुसैन अबू सरदाना साहिब शहीद आफ़ ग़ज़ा और श्रीमान उसमान अहमद गाकोरिया साहिब आफ़ कीनीया का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 22 दिसम्बर 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۗ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۱۵۳

(आले इमरान : 153) और यक़ीनन अल्लाह ने तुमसे अपना वादा सच्चा साबित कर दिखाया जब तुम उसके हुक्म से उनकी बेख़कुनी कर रहे थे जबकि तुमने बुज़दिली दिखाई और तुम असल हुक्म के बारे में बाहम झगड़ने लगे और तुमने उसके बावजूद भी न-फ़रमानी की कि उसने तुम्हें वे कुछ दिखला दिया जो तुम पसंद करते थे। तुम में ऐसे भी थे जो दुनिया की तलब रखते थे और तुम में ऐसे भी थे जो आख़िरत की तलब रखते थे फिर उसने तुम्हें उनसे परे हटा लिया ताकि तुम्हें आज़माऐ और जो भी हुआ वह यक़ीनन तुम्हें माफ़ कर चुका है। (अर्थात अल्लाह तुम्हें माफ़ कर चुका है) और अल्लाह मोमिनों पर बहुत फ़ज़ल करने वाला है।

यह है आयत जिसकी तफ़सीर में यह अंदाज़ा लगाया जाता है कि माल-ए-ग़नीमत या उस जंग के हवाले से यह है।

सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में यह कहना बल्कि सोचना भी उनकी शान के ख़िलाफ़ है कि उनको माल-ए-ग़नीमत की पड़ी होती थी।

ये लोग तो अपने बीवी बच्चे और अपनी जानें तक अपने सबसे महबूब ख़ुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों पर निछावर कर चुके थे और इस से पहले वे अपने अम्वाल-ओ-अस्बाब भी इसी राह में लूटा चुके थे। शहादत के शौक़ में तो जैसा कि वाक़ियात वर्णन हुए हैं ये लोग बाहर निकल कर जंग करना चाहते थे और ये जंगें माल-ए-ग़नीमत हासिल करने के लिए नहीं लड़ी जा रही थीं। ये तो मुस्लमानों पर इल्ज़ाम है। हाँ फ़तह की सूरत में अम्वाल ग़नीमत मिल जाना एक ज़िमनी बात तो हो सकती है लेकिन सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो का मतलूब-ओ-मक़सूद माल-ए-ग़नीमत हासिल करना कदापि नहीं हो सकता था।

बहरहाल तारीख़-ए-इस्लाम में और इसी तरह पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत-ओ-सवानिह वर्णन करते हुए जो इतिहासकार हैं या जो जीवनी लिखने वाले हैं या मुहद्दिस हैं या मुफ़स्सिर हैं लगता है कि इन बुज़ुर्गों को कहीं ग़लती लगी है और केवल किसी रिवायत की सनद इत्यादि पर विश्वास करके उन लोगों ने अपनी सादगी में या उस पर यक़ीन रख के कि यह रिवायत सही होगी ऐसा वर्णन कर दिया है कि सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो माल-ए-ग़नीमत के लिए नीचे उतरे थे। उन्हें इस बात का एहसास नहीं हुआ कि अवाक़िब और असरात के लिहाज़ से ये बात कितनी ज़्यादा नुक़्सानदेह साबित हो सकती है और वे बात रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात बाबरकात हो या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ुव्वत-ए-क़ुदसिया से फ़ैज़याब होने वाले सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन हों, उनकी शान के कितनी मुनाफ़ी हो सकती है। बहरहाल सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो की क़ुर्बानी और जज़्ब-ए-शहादत को देखकर यह बात यक़ीन करनी मुश्किल है कि सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो केवल माल-ए-ग़नीमत हासिल करने के लिए इस दर्राह को छोड़ने के लिए जल्दी कर रहे थे। मालूम होता है कि जब इन सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने देखा कि मुस्लमानों को फ़तह हो चुकी है और वे दुश्मन को भगा रहे हैं और उस का पीछा कर रहे हैं तो दर्रे पर मौजूद सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो इस वाज़ेह फ़तह की ख़ुशी में शामिल होने के लिए बेचैन हो गए। और फ़तह पर ख़त्म होती हुई इस जंग के आख़िरी लमहात में शामिल होने की तड़प से बेचैन हो रहे थे कि हम भी इस ख़ुशी में शामिल हो जाएं। वे शायद समझ रहे हों कि हमारे दूसरे भाई तो जिहाद में बराह-ए-रस्त हिस्सा ले रहे हैं और हम यहां दर्रे में खड़े हैं। तो जिहाद में शामिल होने का शौक़ जोश में आया कि अब फ़तह तो हो चुकी है तो आज के दिन के ख़त्म होते हुए जिहाद में अमलन भी शामिल हो जाएं। इस फ़तह की ख़ुशी तो कम से कम मना लें। लेकिन उनके अमीर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो जो ज़्यादा साहब-ए-फ़िरासत साबित हुए उनकी नज़र नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद पर थी कि ख़ाह कुछ भी हो यहां से नहीं हटना यह उनका फ़ैसला था और दरुस्त फ़ैसला था कि जो भी है हमें यहां से हटना नहीं चाहिए।

जैसा कि मैंने कहा था कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़ैर प्रकशन नोटिस में इस आयत की कुछ तफ़सीर मिलती है। इसके साथ आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है कि مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا इस जगह दुनिया से मुराद माल-ए-ग़नीमत नहीं बल्कि दुनिया वाली चीज़ मुराद है और आख़िरत से मुराद अंजाम और आख़िरी नतीजा है। यह ख़्याल करना कि उन्हें यह ख़्याल आया था कि हमें माल-ए-ग़नीमत

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आजकल ख़ुत्बात ग़ज़व-ए-उहद का वर्णन हो रहा है। जैसा कि वर्णन हुआ था कि मुस्लमानों ने आम जंग में काफ़िरों को सख़्त नुक़्सान पहुंचाया और वे भागने पर मजबूर हो गए लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सख्त हुक्म के बावजूद भी जब दर्रे की हिफ़ाज़त पर मामूर अधिकतर ने दर्रा ख़ाली कर दिया तो दुश्मन ने इस तरफ़ से हमला किया और मुस्लमानों को नुक़्सान पहुंचाया।

जिसकी तफ़सील कुछ इस तरह है कि जब मुशरिकों के झण्डा उठाने वाले एक-एक कर के क़तल हो गए और कोई शख़्स भी अब झण्डा उठाने या उसके क़रीब आने की हिम्मत नहीं कर सका तो एक दम मुशरिक पराजय होने लगे और पीठ फेर कर भागने लगे। उनकी औरतें भी जो कुछ ही देर पहले पुरमसरत लहजों और पूरे जोश-ओ-ख़ुरोश से दफ़ बजा-बजा कर गा रही थीं, दफ़ फेंक कर पहाड़ की तरफ़ भागीं। मुस्लमानों ने दुश्मन को भागते देखा तो वे उनका पीछा करके उनके हथियार लेने और माल-ए-ग़नीमत जमा करने लगे। उसी वक़्त मुस्लमानों का वे तीर-अंदाज़ दस्ता जिसको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहाड़ी पर निर्धारित करके हुक्म दिया था कि किसी भी हाल में अपनी जगह से न हिलें वहां से माल-ए-ग़नीमत जमा करने के लिए भागा। यह कहा जाता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से इस दस्ते के अमीर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको सख़्ती से मना किया कि उनको किसी हाल में भी यहां से हटने का हुक्म नहीं है परंतु वे लोग नहीं माने और कहने लगे मुशरेकीन को पराजय हो गई है, अब हम यहां ठहर कर क्या करेंगे? यह कह कर वे लोग पहाड़ी से उतर आए और माल-ए-ग़नीमत जमा करने लगे। जबकि उनमें से अक्सर लोग अपनी जगह छोड़ चुके थे परंतु उनके अमीर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो और कुछ दूसरे सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी जगह जमे रहे जिनकी संख्या दस से भी कम होगी। उन्होंने नीचे जाने वालों से कहा अर्थात दर्रे से जो नीचे उतर रहे थे कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी कदापि नहीं करूँगा।

उनके अमीर ने यह कहा। अधिकतर इतिहासकार और जीवनी लिखने वाले दर्राह छोड़ने वाले सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन करते हुए यही वर्णन करते हैं कि उनको माल-ए-ग़नीमत की जल्दी थी इसलिए वे इसरार कर रहे थे कि जब बाक़ी सब लोग माल-ए-ग़नीमत लूट रहे हैं तो हम क्यों पीछे रहें जबकि उनके अमीर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो उन्हें रोक रहे थे कि हमें नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यही हुक्म था कि जो भी हो तुम लोग अपनी जगह, उस जगह से नहीं हटोगे इसलिए हमें यहीं रहना चाहिए लेकिन उन लोगों की अधिकतर ने अमीर की बात से इत्तिफ़ाक़ नहीं किया और माल-ए-ग़नीमत लूटने ने के लिए दर्रे से नीचे उतर आए। अक्सर इतिहासकार ने यह लिखा है और कुतुब हदीस और तफ़सीर में भी उमूमी तौर पर यही वर्णन मिलता है कि ये सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो माल-ए-ग़नीमत की जल्दी की वजह से दर्राह छोड़कर चले गए और सूरः आले इमरान आयत 153 कि مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ कि तुम में से ऐसे भी थे जो दुनिया की तलब रखते थे और तुम में ऐसे भी थे जो आख़िरत की तलब रखते थे। इस की तफ़सीर करते हुए अक्सर मुफ़स्सिरीन भी यही लिखते हैं कि सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो माल-ए-ग़नीमत के हुसूल के लिए जल्दी जाना थे लेकिन सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में इस दुनियावी ख़ाहिश के लिए दर्रे को छोड़ने की बात दिल को लगती नहीं।

इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी एक तफ़सीरी नोट लिखा था जो प्रकाशित नहीं हुआ है, वह मैं आगे उसकी तफ़सीर में वर्णन करूँगा। इससे पहले कुछ वर्णन कर दूं या पूरी आयत पहले वर्णन कर देता हूँ। पूरी आयत इस तरह है कि :

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ۗ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ

नहीं मिलेगा वाक़िया के ख़िलाफ़ है क्योंकि बदर में तो उन लोगों को भी "माल-ए--ग़नीमत में" हिस्सा मिला था जो कुछ मजबूरियों की वजह से जंग में शामिल नहीं हो सके थे इसलिए यह ख़्याल बिल्कुल ग़लत है।

सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के मुताल्लिक़ दुनियादारी का ख़्याल करना दरुस्त नहीं।

यह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया। फिर फ़रमाया कि "असल बात यह है कि उनको यह ख़ाहिश थी कि हम भी इस जंग-ए-उहद में शरीक हों। यह भी दुनयावी ख़्याल था कि हम इस ग़ज़वा में शामिल हों और काफ़िरों को मारें। लूट के माल में शामिल होना इस जगह मुराद नहीं। फ़रमाता है कि तुमको यह ख़्याल था कि हम ग़ज़वा में शामिल होने वालों से पीछे न रह जाएं परंतु यह भी एक दुनयावी ख़्याल है दुनयावी ख़्याल इसलिए है कि केवल लड़ना तो कोई बात नहीं है। आँहज़रत सल्ल--ल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म की तामील नहीं करना यह दुनयावी ख़्याल बन जाता है। "तुम्हें तो हुक्म की तामील करनी चाहिए थी और बस' क्योंकि आँहज़रत सल्ल--ल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म की तामील न करना चाहे वे दीन की ख़ातिर जंग हो रही हो और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस से मना कर दिया और कहीं और जगह डयूटी लगा दी तो इस हुक्म की तामील असल में दीन है न कि जंग करना। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि وَمِنۡكُمۡ مَّنۡ يُّرِيۡدُ الۡاٰخِرَةَ फ़रमाता है कि तुम्हारा अफ़्सर और उसके साथी तो आख़िरत को चाहते थे। उनके मद्द-ए-नज़र अंजाम और नतीजा था। वे समझते थे कि इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा। वे न-फ़र--मानी के बदनतीजा को देख रहा था। इस तरह उसके साथी भी उसे हक़ पर समझते थे। अफ़्सर और उसके साथ मुत्तफ़िक़ लोगों की नज़र इस बात के आख़िरी नतीजा पर पहुंच रही थी कि वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म को जंग में शमू--लियत से ज़्यादा अहम थे।" बात स्पष्ट हो गई। "लेकिन बरख़िलाफ़ उसके तुम्हारी नज़र सतही बात पर पड़ी हुई थी। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "ये माने सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो की इस शान के मुनासिब-ए-हाल हैं जो उनके कामों और उनकी क़ुर्बानियों से ज़ाहिर होती है।

(ग़ैर प्रकशन नोटिस हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः आले इमरान की आयत के अधीन : 153)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्-राबे ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के इस नोट का वर्णन करते हुए उसकी वज़ाहत फ़रमाई कि वे दुनिया चाहते थे अर्थात उनसे झगड़ा करने वाले और दस्ते के अमीर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्ला--हु अन्हो यह उक़्बा चाहते थे। हज़रत ख़लीफ़ा राबे रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं कि इस मज़मून को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने नोटिस में वर्णन किया है और एक अच्छा नुक्ता वर्णन फ़रमाया है कि यहां दुनिया से मुराद जो लोग ये लेते हैं कि लूट मार और माल-ए-ग़नीमत, ये दरुस्त नहीं है। वे वक़्ती फ़तह की तरफ़ नज़र रख रहे थे और दुनिया से मुराद उनकी यहां यह है कि वे जो मुआमला पहले ज़ाहिर हो चुका है उनकी नज़र इस पर थी अर्थात जो जंग जीती जा चुकी थी और अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो की आख़िरत पर नज़र थी कि वह रसूले अकरम सल्ल--ल्लाहो अलैहि वसल्लम की रज़ा में सबसे बड़ी कामयाबी देखते थे। अतः वे ये चाहते थे कि अंततः मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अल्लाह राज़ी रहे और यह वक़्ती तौर पर जो चीज़ें दिखाई दे रही हैं बिल्कुल बेमानी और बे-हक़ीक़त हैं। असल हमारी नेकी उनकी रज़ा हासिल करना है।

हज़रत ख़लीफ़ा राबे ने आगे वर्णन किया कि अतः हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि यह बेहस ही बे-तअल्लुक़ है कि वे दुनिया चाह रहे थे और वे आख़िरत चाह रहे थे क्योंकि हक़ीक़त यह है कि दुनिया वह थी भी कितनी सी। वह अजीब-ओ-ग़रीब सी बात नज़र आती है। फिर तफ़सील वर्णन की उन्होंने कि वे जो दर्रे की हिफ़ाज़त पर निर्धारित थे दर्रे से भागे होंगे उस वक़्त तक तो सब चीज़ें बट भी चुकी होंगी और ये ख़्याल कि उनको यह जल्दी थी कि हम जल्दी से वहां जा कर शामिल हो जाएं। यह क्यों नहीं सोचते जैसा कि क़ुरआन-ए-करीम फ़रमाता है हुस्न--ए-ज़न करो अपने लोगों पर कि वे इस ख़्याल से गए थे कि सारे फ़तह के शादयाने बजा रहे हैं, ख़ुश हो रहे हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब खड़े हैं, एक दूसरे को मुबारकबाद दे रहे होंगे तो हम क्यों इस मंज़र से पीछे रहें। तो बसा--औक़ात ऐसा होता है और यह फ़ित्रत के ऐन मुताबिक़ है कि जहां जश्न मनाया जा रहा हो, ख़ुशी मनाई जा रही हो, सब दौड़-दौड़ कर वहां पहुंचते हैं। ख़लीफ़ा राबे रहमहुल्लाह कहते हैं यहां भी अपने क़ियाम के दौरान बार-बार देख चुके हैं कि कोई अच्छी ख़बर हो तो यहां कोई माल-ए-ग़नीमत लूटने तो लोग नहीं आते। लोग पहुंचते हैं और ख़ुशी में हिस्सा लेने पहुंचते हैं। तो उनके नज़दीक यह था कि इतना मज़ा आ रहा है। नीचे देखो या जहां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे। सारे लुतफ़ उठा रहे हैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो कर। ख़ुदा का वादा पूरा हुआ है। हम यहां खड़े अकेले, हम भी वहां जाते हैं लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो की आख़िरत पर नज़र थी कि इस वक़्त ख़ुशी से यह बहुत ज़्यादा मज़े की बात है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ातिर अलग एक तरफ़ बैठे रहें। जो हमें हुक्म दिया गया है इस की तामील करें। और जो इस का लुतफ़ है वे दरअसल वह लुतफ़ नहीं है जो वहां ख़ुशी है।

(उद्धारित दरसुल-क़ुरआन 5 रमज़ानुल मुबारक 16 फ़रवरी 1994 ई.)

बहरहाल एक तरफ़ जब कुफ़्फ़ार का लश्कर बुरी तरह पराजय खा कर पीठ फेर कर भाग रहा था और दूसरी तरफ़ पहाड़ी दर्रे पर मुतय्यन पच्चास में से चालीस के क़रीब मुजाहेदीन दर्राह छोड़ कर नीचे उतर गए तो उसी वक़्त ख़ालिद बिन वलीद ने देखा कि वह पहाड़ी दर्राह जहां तीर अंदाज़ों का दस्ता जमा हुआ था, ख़ाली हो चुका है, केवल चंद आदमी बाक़ी रह गए हैं। ख़ालिद बिन वलीद उस वक़्त तक ईमान नहीं लाए थे। यह देखते हैं वह अक्रमा बिन अबुजहल को साथ लेकर अपने घुड़सवार दस्ते के साथ पलटे। उन्होंने पहाड़ी पर पहुंच कर उन चंद लोगों पर हमला कर दिया जो तीर-अंदाज़ दस्ते में से बच्चे खिचे वहां मौजूद थे। उनका यह हमला इतना शदीद था कि एक ही हमले में उन्होंने इस दस्ते के अमीर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके चंद साथियों को क़तल कर दिया। इन लोगों ने हज़रत अब्दु--ल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो की लाश का शरीर के अंग काट दिए अर्थात हाथ पांव और जिस्म के दूसरे अंग काट डाले। इस के बाद क़ुरैश के इस दस्ते ने नीचे उतर कर अचानक मुस्लमानों को घेर लिया।

मुस्लमान उस वक़्त बे-ख़बरी के आलम में माल-ए-ग़नीमत जमा करने और मुश--रेकीन को क़ैदी बनाने में व्यस्त थे कि अचानक मुशरिकों के घुड़सवार दस्ते घोड़े दौड़ाते हुए उनके सिरों पर पहुंच गए।

ये लोग उज़्ज़ा और हुबल के नारे लगा रहे थे जो उहद के रोज़ मुशरेकीन का सम्मान था। उन्होंने मुस्लमानों के पास पहुंचते ही बे-ख़बरी में उनको तलवारों पर रख लिया। मुस्लमान बदहवास हो गए और जिधर जिसका मुँह उठा वह इस तरफ़ भागने लगा। जो कुछ माल-ए-ग़नीमत उन्होंने जमा किया था और जितने क़ैदी बनाए थे उन सबको छोड़ कर मुस्लमान हर तरफ़ बिखर गए। न इन्नकी सफ़ें बाक़ी रहीं न तर्तीब। एक को दूसरे की कोई ख़बर नहीं थी। मुशरेकीन का पर्चम उस वक़्त तक ज़मीन पर पड़ा हुआ था कि इस नई सूरत-ए-हाल को देखकर अचानक एक औरत अम्र बिंत अल्-क़मा ने उस को उठा कर बुलंद कर दिया और मुशरेकीन को ऊंची आवाज़ में वापस बुलाना शुरू किया। भागते हुए मुशरेकीन ने अपने पर्चम को ऊंचा होते देखा तो वे समझ गए कि जंग का पाँसा पलट चुका है और सब के सब पलट कर फिर अपने झंडे के गर्द जमा हो गए।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 308 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

एक लेखक ने लिखा है कि क़ुरैश के ख़ाक-ओ-ख़ून में लत-पत झंडे को उमरा बिंत अल्क़मा नामी महिला ने पकड़ कर बुलंद कर दिया। वह ज़ोर-ज़ोर से उसे लहराने लगी और मैदान से फ़रार होने वालों को मलामत करने लगी। वह कुफ़्फ़ार मक्का को पलट आने के लिए पुकार रही थी। यूं पराजय ख़ूर्दा कुफ़्फ़ार वापस मैदान-ए-उहद में इकट्ठे हो गए और उन्होंने आगे और पीछे की तरफ़ से मुस्लमानों को घेर लिया। मुस्ल--मान बेफ़िकरी की बिना पर सफ़ बंदी ख़त्म कर चुके थे इसलिए अब उनकी कोई तर्तीब नहीं थी।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 6 पृष्ठ 486-487 बज़मे इक़बाल लाहौर)

उस रोज़ मुस्लमानों की ख़ासी संख्या ने जाम-ए-शहादत नोश किया। पहले जो फ़तह हुई थी अब वह पराजय के इबतेला में तबदील हो चुकी थी। एक लेखक उस वक़्त का दृश्य वर्णन करते हुए लिखता है कि मुस्लमानों ने तीर अंदाज़ों की ग़लती के बाद अपनी तंज़ीम को खो दिया और उनकी सफ़ें दरहम-बरहम हो गईं और उन्होंने ग़िनाइम को अपने हाथों से फेंक दिया और बदहवासी के आलम में एक दूसरे को मारने लगे और उनमें से बहुत से लोग सरगर्दां हो गए। उन्हें मालूम नहीं था कि वह कहाँ जाएं

विशेषता मुशरेकीन के मुनादी के ऐलान के बाद कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़तल हो गए हैं। यह एक सख़्त आज़माईश थी जिसमें बहुत से मुस्लमान अपने भाईयों के हाथों बला इरादा क़तल हो कर गिर पड़े। कई दफ़ा ग़लती से मुस्लमानों ने मुस्लमानों को भी क़तल कर दिया और मुतवक़्क़े था कि दुश्मनों की संख्या अधिक होने सेजिसने ख़ालिद की कार्रवाई के बाद दुबारा अपने आपको मुनज़्ज़म कर लिया था मु-स्लमानों की क़लील संख्या को तबाह कर देगी और उनका ख़ातमा कर देगी।

(ग़ज़व-ए-उहद अज़ मुहम्मद अहमद पृष्ठ 140-141 नफ़ीस अकैडमी कराची 1989 ई.)

लेकिन बहरहाल अल्लाह तआला ने फिर फ़ज़ल फ़रमाया और वह दुश्मन जो चाहते थे वह तो नहीं हुआ।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के पिता यमान का मुस्लमानों के हाथों ग़लती से क़तल होने के बारे में लिखा है कि सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के एक दूसरे को क़तल करने की एक उदाहरण हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के पिता यमान थे जिन्हेंमुस्लमानों ने न वाक़फ़ीयत में शहीद कर दिया था। इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि जिस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उहद की जंग के लिए तशरीफ़ ले गए तो साबित बिन वकश और हुसैल बिन जाबिर जिनका नाम यमान था और यह हुज़ैफ़ा बिन यमान के बाप थे, वे दोनों उम्र रसीदा थे और इस क़िला में थे जिसमें मुस्लमानों की औरतें और बच्चे हिफ़ाज़त के लिए पनाह ले रहे थे। उनमें से एक ने दूसरे से कहा कि तुम किस चीज़ का इंतेज़ार कर रहे हो? दोनों बूढ़े क़िला में बंद बैठे थे। बातें करने लगे, कहने लगे किस चीज़ का इंतेज़ार कर रहे हैं हम? हमारी ज़्यादा उम्र तो बाक़ी नहीं रही। बुड्ढे हो चुके हैं हम। यदि हम आज नहीं मरे तो कल ज़रूर मर जाऐंगे। क्या हम अपनी तलवारें न उठाएं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जा मिलें। शायद अल्लाह तआला हमें शहादत नसीब फ़र्मा दे। फिर ये दोनों तलवार पकड़ कर कुफ़्फ़ार पर जा पड़े और लोगों में मिल-जुल गए। अर्थात मुस्लमान तो ज़हनिया जानते थे कि ये दोनों बुज़ुर्ग जंग में शामिल ही नहीं हैं और मदीना में मौजूद हैं जबकि ये अब मैदान-ए-जंग में पहुंच कर लड़ाई में शामिल हो चुके थे और मुस्लमान उन्हें फ़ौरी तौर पर पहचान नहीं सके, पता ही नहीं लगा कि ये कौन हैं। साबित बिन वकश को तो कुफ़्फ़ार ने शहीद कर दिया और हुज़ैफ़ा के बाप को मुस्लमानों ने न वाक़फ़ीयत में शहीद कर दिया। हुज़ैफ़ा ने कहा अल्लाह की क़सम यह तो मेरा बाप है जो शहीद हो गए। उन्होंने देखा तो कहा यह तो मेरा बाप है। मुस्लमानों ने कहा अल्लाह की क़सम हमने उनको नहीं पहचाना, ग़लती से शहीद हो गए। और वाक़ई उन्होंने सच्च कहा था। हुज़ैफ़ा ने कहा ख़ुदा तुम को माफ़ करे वह बहुत क्षमा करने वाला है। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बाद में हुज़ैफ़ा को उनके बाप का ख़ून बहा देना चाहा। ग़लती से मुस्लमानों से शहीद हो गए थे, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उसका ख़ून बहा दिया जाए परंतु हुज़ैफ़ा ने नहीं लिया, उन्होंने इंकार कर दिया और मुस्लमानों को माफ़ कर दिया। इस से हुज़ैफ़ा की क़दर-ओ-मंज़िलत ख़ुदा और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुस्लमानों के नज़दीक बहुत ज़्यादा हुई।

(सीरतुल नब्विया ले इब्ने हशशाम पृष्ठ 537-538 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

इस जंग में हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत भी हुई थी। उनका वाक़िया भी लिखा है कि अमीर बिन इसहाक़ से इस तरह मर्वी है कि उहद के रोज़ हम्ज़ा बिन अब्दुल मुतलिब रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आगे दो तलवारों से जंग कर रहे थे और कह रहे थे कि मैं असदुल्लाह अर्थात ख़ुदा का शेर हूँ। यह कहते हुए कभी आगे जाते और कभी पीछे हटते। वे इसी हालत में थे कि यकायक फिसल कर गिरे। उन्हें वहशी अस्वद ने देख लिया। अबू उसामा ने कहा कि उसने उन्हें नेज़ा खींच कर मारा और क़तल कर दिया है।

(अल् तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 8 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी जो लिखा है वह इस तरह है कि "हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हक़ीक़ी चचा होने के इलावा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रज़ाई भाई भी थे। निहायत बहादुरी के साथ लड़ रहे थे और जिधर जाते थे उनके सामने क़ुरैश की सफ़ें फट फट जाती थीं परंतु दुश्मन भी उनकी ताक में था और जुबैर बिन मुताम अपने एक हब्शी ग़ुलाम वहशी नामी को खासतौर पर आज़ादी का वादा देकर अपने साथ लाया था कि जिस तरह भी हो हमज़ा को जिन्हों ने जुबैर के चचा तईमा बिन अदी को बदर के अवसर पर तलवार की घाट उतारा था क़तल करके उसके इंतेक़ाम को पूरा करे। इसलिए वहशी एक जगह पर छुप कर उनकी ताक में बैठ गया और जब हम्ज़ा किसी शख़्स पर हमला करते हुए वहां से गुज़रे तो उसने ख़ूब ताक कर उनकी नाफ़ के नीचे अपना छोटा सा छुरा मारा जो लगते ही बदन के पार हो गया। हमज़ा लड़खड़ाते हुए गिरे परंतु फिर हिम्मत करके उठे और एक जस्त करके वहशी की तरफ़ बढ़ना चाहा परंतु फिर लड़खड़ा कर गिरे और जान दे दी और इस तरह इस्लामी लश्कर का एक मज़बूत बाज़ू टूट गया।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब हमज़ा के क़तल की इत्तिला मिली तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सख़्त सदमा हुआ और रिवायत आती है कि ग़ज़व-ए-तायफ के बाद जब हमज़-ए-का क़ातिल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे माफ़ तो फ़र्मा दिया। परंतु हम्ज़ा की मुहब्बत का सम्मान करते हुए फ़रमाया कि वहशी मेरे सामने न आया करे।

उस वक़्त वहशी ने अपने दिल में यह अह्द किया कि जिस हाथ से मैंने रसूले ख़ूदा के चचा को क़त्ल किया है। जब तक इसी हाथ से किसी बड़े इस्लाम केदुश्मन तलवार के घाट न उतार दूँ चैन नहीं लूँगा अब मुस्लमान हो गया था नज़रियात बदल गए, ख़्यालात बदल गए। "इसलिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के अह्द-ए--ख़िलाफ़त में उसने जंग-ए-यमामा में नबुव्वत के झूठे मुद्दई मुसैलमा कज़्ज़ाब को क़त्ल करके अपने अह्द को पूरा किया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम. ए. रज़ियल्लाहु अन्हो पृष्ठ 492-493)

हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश की बे-हुरमती भी की गई

रिवायत है कि अबूसुफ़ियान की बीवी हिंदा ग़ज़व-ए-उहद के दिन लश्करों के हमराह आई। उसने अपने बाप का इंतेक़ाम लेने के लिए जो बदर में हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ मुक़ाबला करते हुए मारा गया था या नज़र मान रखी थी कि मुझे अवसर मिला तो मैं हम्ज़ा का कलेजा चबाऊँगी। जब यह सूरत-ए-हाल हो गई और हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो पर मुसीबत आ गई तो मुशरेकीन ने कत्ल होने वालों के शरीर के अंग काट दिए, उनकी शक्लें बिगाड़ दें। नाक कान इत्यादि अंग काटे। वह हम्ज़ा के जिगर का एक टुकड़ा लाए। हिंदा उसे लेकर चबाती रही कि खा जाए परंतु जब वह इस को निगल न सकी तो फेंक दिया। यह वाक़िया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मालूम हुआ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि :

अल्लाह ने आग पर हमेशा के लिए हराम कर दिया है कि हम्ज़ा के गोश्त में से कुछ भी चखे।

(अल्तबकातुल कुबरा लेइब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 8 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश के पास आकर जिन जज़बात का इज़हार किया और आप रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलंद मुक़ाम की जो ख़ुशख़बरी दी उसके बारे में रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश को देखा तो उनका कलेजा निकाल कर चबाया गया था। इब्ने हशशाम कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस हाल में जब हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश पर आकर खड़े हुए तो फ़रमाने लगे कि हे हम्ज़ा! तेरी इस मुसीबत जैसी कोई मुसीबत मुझे कभी नहीं पहुँचेगी। मैंने इस से ज़्यादा तकलीफ़-दह मंज़र आज तक नहीं देखा। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिबराईल ने आकर मुझे ख़बर दी है कि हम्ज़ा बिन अब्दुल मुतलिब को सात आसमानों में अल्लाह और उस के रसूल का शेर लिखा है।

(सीरत इब्ने हशशाम पृष्ठ 395 दार इब्ने हज़ीम बेरूत 2009 ई.)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्ण फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शदीद दुश्मनों में से एक हिन्दा थी जो इतनी सख़्त मुख़ालिफ़ थी कि जंग-ए-उहद के अवसर पर लोगों को शेअर पढ़ पढ़ कर भड़काती थी कि जाओ और इस्लामी लश्कर पर हमला करो और जब एक ख़तरनाक अवसर मुस्लमानों के लिए आया तो उसने कहा कि जो शख़्स हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्ला-हु अन्हो का जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा थे कलेजा निकाल कर मेरे पास ले आएगा और इसी तरह उनका नाक और उनके कान काट कर ले आएगा में उसे इनाम दूँगी। इसलिए हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश के साथ ऐसा ही

व्यवहार किया गया। जंग के बाद जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह बात मालूम हुई कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा की ऐसी बेहुरमती की गई है तो स्वभाविक तौर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ हुई और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब दुश्मनों ने इस किस्म के ज़ालिमाना व्यवहार की इबतेदा कर दी है तो मैं भी उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करूँगा। तब अल्लाह तआला की तरफ़ से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर वह्यी नाज़िल हुई कि उनके इस ज़ालिमाना व्यवहार के बावजूद आपको ऐसा कोई अक़्दाम नहीं करना चाहिए और क्षमा और दरगुज़र से काम लेना चाहिए।"(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 6 पृष्ठ 353-354 सूरत अल्-नूर नंबर : 47) इसलिए इस्लाम में मना कर दिया गया।

यहां हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की बहन का भी वाक़िया लिखा है कि किस तरह उन्होंने सब्र-ओ-रज़ा और इताअत का काबले रशक नमूना दिखाया। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि ग़ज़्व-ए-उहद के दिन इख़्तेताम पर एक औरत सामने से बड़ी तेज़ी के साथ आती हुई दिखाई दी। क़रीब था कि वह शुहदा की लाशें देख लेती। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसको अच्छा नहीं समझा कि कोई ख़ातून वहां आए और लाशों की जो बहुत बुरी हालत थी क्योंकि अधिकतर लोगो ंके अंग काटे हुए थे देख सके। इसलिए फ़रमाया कि उस औरत को रोको, उस औरत को रोको। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि मैंने ग़ौर से देखा कि यह तो मेरी माता हैं। हज़रत सफ़ीया रज़ियल्लाहु अन्हा हैं। इसलिए मैं उनकी तरफ़ दौड़ता हुआ गया और शुहदा की लाशों तक पहुंचने से क़बल ही मैंने उन्हें जा लिया। उन्होंने मुझे देखकर मेरे सीने पर हाथ मार कर मुझे पीछे धकेल दिया। एक मज़बूत महिला थीं। वह कहने लगीं कि परे हटो! मैं तुम्हारी कोई बात नहीं मानूँगी। मैंने अर्ज़ किया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ियल्लाहु अन्हा को रोकने का कहा है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हा इन लाशों को मत देखें। यह सुनते ही वह रुक गईं और अपने पास मौजूद दो कपड़े निकाल कर फ़रमाया। ये दो कपड़े हैं जो में अपने भाई हम्ज़ा के लिए लाई हूँ क्योंकि मुझे उनकी शहादत की ख़बर मिल चुकी है। बहरहाल उन्होंने बेटे की बात तो नहीं मानी, उसको धक्का मार कर पीछे कर दिया लेकिन जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हवाला सुना तो इताअत में फ़ौरी तौर पर रुक गईं। जहां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम सुना वहीं बावजूद ग़म की हालत के होश-ओ-हवास क़ायम रखे और ईतात की।

फिर कहने लगीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ करो। रुक तो मैं गई हूँ, नहीं जाती लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ करो कि मुझे पता चल चुका है कि मेरा भाई हम्ज़ा शहीद हो चुका है और कुफ़्फ़ार ने उनकी लाश अंग काट दिए हैं। मैं सिर्फ उस को देखना चाहती हूँ और वादा करती हूँ कि कोई रोना चिल्लाना नहीं करूँगी, सब्र करूँगी। इसलिए जब हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह अर्ज़ किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उन्हें जाने दो। ठीक है देख लें जा के। वह अपने भाई की नाश के पास जा कर बैठ गईं और शेर जैसे बहादुर शहीद को यूं देखकर बे-इख़्तियार आँखों से आँसू की नहर जारी हो गई लेकिन ज़बान से कोई शब्द न निकाला। एक रिवायत के मुताबिक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी उनके पास तशरीफ़ ले आए और उनके पास आकर बैठ गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आँखों से भी आँसू रवां होने लगे। बहादुर और साबिर बहन ने कुछ देर अश्कों से ख़राज-ए-अक़ीदत पेश किया और उठ खड़ी हुईं और अपने बेटे से कहने लगीं कि अपने भाई के लिए दो चादरें लाई हूँ, जैसा कि पहले बताया था। शहादत की ख़बर मुझे मिल चुकी थी इसलिए मैं ले आई थी। तुम उन्हें इन कपड़ों में दफ़्न कर देना। रावी कहते हैं कि जब हम हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को इन दो कपड़ों में कफ़न देने लगे तो देखा कि उनके पहलू में एक अंसारी शहीद हुए पड़े हैं। उनके साथ भी वही व्यवहार किया गया था जो हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ किया गया था। हमें इस बात पर शर्म महसूस हुई कि हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को दो कपड़ों में कफ़न दें और इस अंसारी को एक कपड़ा भी उपलब्ध न हो इसलिए हम ने यह तै किया कि एक कपड़े में हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को और दूसरे में इस अंसारी सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हो को कफ़न दें। अनुमान करने पर ज्ञात हुआ कि दोनों हज़रात में से एक ज़्यादा लंबे क़द का है। हम ने क़ुरआ-अंदाज़ी की और जिसके नाम जो कपड़ा निकला उसे उसी कपड़े में दफ़्न कर दिया।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल भाग 1 पृष्ठ 452 हदीस 1418 आलेमुल कुतुब बेरूत)

(उद्धारित ख़त्-बाते ताहेर, तक़ारीर जलसा सालाना ख़िलाफ़त पूर्व की पृष्ठ 364 से 365 ताहेर 2006 ई.)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो लश्कर कुफ़्फ़ार को परेशान देखकर क्लब-ए-लश्कर में घुस गए। गोया मुस्लमानों की फ़तह हो चुकी थी कि अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुक्म को अंदेखा करके माले गनीमत की आशा में मोरचा छोड़ कर नीचे उतर आए। दुश्मन मोरचा ख़ाली देखकर सवारों को समेट फ़ौज इस्लाम के अक़्ब पर आ गिरे। जंग-ए-अज़ीम हुई। हज़रत अमीर हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो और अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हुए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत सिद्दीक़ रज़ी अल्लाह अन्हुम भी ज़ख़्मी हुए। हिन्दा बिंत उत्बा पत्नी अबू सुफ़ियान ने अमीर हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो का जिगर चीर कर चबाया और मुस्लमान मक़्तूलों के सुनने और देखने के अंग अर्थात कान और नाक काट कर और उनके हार बना कर गले में पहने। यह बे-अदबियाँ शहीदों की लाशों से देखकर मुस्लमानों की आँखों में ख़ून उतर आया यहां तक कि ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ऐसी रिक़्क़त तारी हुई और ऐसा गुस्सा आया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी हुक्म दिया कि अब जो तुम्हारी फ़तह हो तो तुम भी कुफ़्फ़ार की लाशों से वैसा ही व्यवहार करना। इसलिए अपने अज़ीज़ जांनिसार चचा अमीर हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को देखकर फ़रमाया لَأُمَثِّلَنَّ بِسَبْعِينَ مِنْهُمْ مَكَانَكَ۔ یعنی अर्थात तेरे बदले में उनके सत्तर को मुस्ला करूँगा परंतु स्वभाविक रहम ने इंसानी द्वेष पर विजय प्राप्त की निम्नलिखित आयत के उतरने की तहरीक कि इन اِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ (अल् नहल : 127) ऐसे अवसर और ऐसी हालत में यह सब्र सुब्हान-अल्लाह। सच्च है وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ (अल् अंबिया : 108) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की समस्त संसार के लिए रहमत होने की इस में आपने तारीफ़ वर्णन फ़रमाई है। ख़लीफ़ा प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं "अतः उस रोज़ से लाशों की पामाली करने और उनके मुख के अंग काटने की बुरी रस्म जो अगले ज़माने की सब क़ौमों में जारी थी मुस्लमानों में पूर्णतः हराम हो गई और केवल इस्लाम ही को यह गौरव अता हुआ।

इस लड़ाई में जबकि बड़ा सदमा मुस्लमानों को पहुंचा और अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो की सिपाह की ख़ता से यह बला आई परंतु एक बड़ा लाभ भी हासिल हुआ कि मुनाफ़िक़ों का नफ़ाक़ और यहूदियों का द्वेष और क्रोध साफ़-साफ़ स्पष्ट हो गया और ख़ालिस मुस्लमान स्पष्ट हो गए।"

(फ़सलुल् खिताबि हिस्सा प्रथम पृष्ठ 126 से 127)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शदीद दुश्मनों में से एक हिन्दा थी।' कुछ उर्दू कुतुब में हिन्दा लिखा है। असल में इस का हिंद नाम है। "जो इतनी सख़्त मुख़ालिफ़ थी कि जंग-ए-उहद के अवसर पर लोगों को शेअर पढ़-पढ़ कर भड़काती थी कि जाओ और इस्लामी लश्कर पर हमला करो और जब एक ख़तरनाक अवसर मुस्लमानों के लिए आया तो उसने कहा कि जो शख़्स हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो का जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा थे कलेजा निकाल कर मेरे पास ले आएगा और इसी तरह उनका नाक और उनके कान काट कर ले आए गा मैं उसे इनाम दूँगी इसलिए हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्होकी नाश के साथ ऐसा ही व्यवहार किया गया। जंग के बाद जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह बात मालूम हुई कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा की ऐसी बे-हुरमती की गई है तो स्वभाविकता आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कष्ट हुआ और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब दुश्मनों ने इस प्रकार के ज़ालिमाना व्यवहार की इबतेदा कर दी है तो मैं भी उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करूँगा। तब अल्लाह तआला की तरफ़ से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर वह्यी नाज़िल हुई कि उनके इस ज़ालिमाना व्यवहार के अतिरिक्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ऐसा कोई इक़्दाम नहीं करना चाहिए और क्षमा और दरगुज़र से काम लेना चाहिए।"

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 6 पृष्ठ 353-354)

जंग की बाक़ी तफ़सील इन शा-ए-अल्लाह आइन्दा वर्णन करूँगा। कि मैं फ़लस्तीनियों के लिए दुआ के लिए भी कहता रहता हूँ।

दुआ करें। ज़ुलम के ख़िलाफ़ हक़ीक़ी अमल की दुनिया को अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे।

जबकि आवाज़ों में तो कुछ बुलंदी पैदा होनी शुरू हुई है, बातें भी करते हैं कि ज़ुलम हो रहा है, ज़ुलम हो रहा है। लेकिन लगता है इसराईली हुकूमत से सब ख़ौफ़ज़दा हैं या फ़िलतन ये मग़रिबी दुनिया मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जो नफ़रत है इस की वजह से ये चाहते हैं कि मुस्लमानों पर ज़ुलम ख़त्म न हो या जो कोशिश होनी चाहिए इस तरह कोशिश न हो। यह नहीं देखते कि मासूम बच्चे हैं, मज़लूम औरतें हैं, बूढ़े हैं, इन पर ज़ुलम हो रहे हैं। तो बहरहाल इन पर तो हम ज़्यादा एतेमाद नहीं कर सकते लेकिन कोशिश बहरहाल करते रहना चाहिए, उनको समझाते भी रहना चाहिए और दुआ भी करते रहना चाहिए।

मुस्लमान मुल्कों को ही अल्लाह तआला हिम्मत दे कि अपनी आवाज़ में ज़ोर पैदा करें और हक़ीक़त में एक बन के इस ज़ुलम के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाएं और इस को ख़त्म करने की कोशिश करें।

नमाज़ के बाद में दो जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा। पहला जनाज़ा है श्रीमान शेख़ अहमद हुसैन अबू सरदाना साहिब जो ग़ज़ा में रहते थे।

मुहम्मद शरीफ़ ओदा साहिब ने उनके बारे में लिखा है कि पिछले दिनों ग़ज़ा में इसराईली बमबारी में हमारे यह बुज़ुर्ग अहमदी शेख़ अहमद हुसैन अबू सरदाना साहिब शहीद हुए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम मौजूदा जंग में ग़ज़ा में शहीद होने वाले पहले अहमदी हैं। शेख़ अहमद अबू सरदाना साहिब की उम्र तक़रीबन चौरानवे 94 वर्ष थी। आप अल अज़हर यूनीवर्सिटी से फ़ारिगुल तहसील उल्मा में से हैं 1970 ई. में उन्हों ने अपने बाअज़ दोस्तों के साथ हायफ़ा तशरीफ़ लाए। चूँकि वह ईद का दिन था ख़ुदाई तसर्रुफ़ के तहत मरहूम नमाज़-ए-ईद के लिए अपने दोस्तों के साथ कबाबीर पहुंचे। मौलाना बशीरुद्दीन अबैदुल्लाह साहिब मरहूम मुबल्लिग सिल्सिला ने ख़ुतबा ईद के दौरान ज़हूर इमाम महदी का वर्णन फ़रमाया जिससे मरहूम शेख़ अबू सरदाना साहिब की दिलचस्पी बढ़ गई। उन्होंने साथ बैठे हुए अहमदी अला-उद्दीन ओदा साहिब से कहा कि मौलाना बशीरुद्दीन अबैदुल्लाह से मेरी तफ़सीली मुलाक़ात करवा दो। बातचीत करते समय उन्होंने मौलाना साहिब से कहा कि मुझे मेरे पिता मरहूम की नसीहत है कि अगर तुम्हें अपनी ज़िंदगी में इमाम महदी की आमद की ख़बर मिले तो ज़रूर बैअत करना इसलिए उसी रोज़ श्रीमान शेख़ अहमद अबू सरदाना साहिब ने बैअत की। उनकी बैअत को देखकर उनके कुछ साथियों ने भी बैअत की। मरहूम अपने इलाक़े में एक सम्मानित आलम के तौर पर हरदिलअज़ीज़ थे। उनकी कोई औलाद नहीं है जबकि उनके अज़ीज़ों में से बाअज़ मुख़लिस अहमदी मौजूद हैं। बैअत के बाद मरहूम हसब-ए-तौफ़ीक़ कबाबीर भी जाते रहे और कबाबीर के अहमदियों से संपर्क में रहे। ख़िलाफ़त से बहुत मुहब्बत करने वाले थे और कई दफ़ा उन्होंने इस बात का इज़हार किया कि वे सच्चे हैं।

क़ुरआन-ए-मजीद से ग़ैरमामूली लगाओ था। हर हफ़्ता में एक-बार मुकम्मल क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत किया करते थे बल्कि उन्होंने मुझे जो पैग़ाम भेजा था इस रिकार्डिंग में भी वर्णन है। साबिक़ क़ाज़ी अल्कज़ा फ़लस्तीन शेख़ मुहम्मद हुसैन अबू सरदाना, मरहूम अहमद अबू सरदाना साहिब के भाई थे। उनकी पत्नी जो दूसरी बीवी हैं वह भी इस हादिसा में ज़ख़मी हुई हैं अल्लाह तआला उनको सेहत दे।

डाक्टर अज़ीज़ हफ़ीज़ साहिब यहां से ह्यूमैनिटी फ़रस्ट के तहत वहां जाते रहे, उनको अबू सरदाना साहिब से मिलने का अवसर मिला। उन्होंने कहा जब मैं उनको मिलने गया तो वह मेरी इज़्ज़त के लिए उठने की कोशिश करने लगे तो मैंने उनको कहा बैठे रहें। बड़े जज़बात में आ गए और अपनी छड़ी से हल्का सा टच (touch) कर के उनको कहने लगे कि तुम ख़लीफ़तुल मसीह के नुमाइंदे मेरे सामने खड़े हो तो मैं कैसे बैठ सकता हूँ। ख़िलाफ़त का बड़ा इज़्ज़त और सम्मान था। और फिर उन्होंने हाथ पकड़ा और कहने लगे कि जिस सरज़मीन से तुम ताल्लुक़ रखते हो वहां मसीह मौऊद आए थे। और मसीह मौऊद और ख़िलाफ़त के लिए उनकी मुहब्बत इस क़दर थी कि उनको देखकर कहते हैं मैं भी अशकबार हो गया। फिर उन्होंने डाक्टर साहिब के ज़रीया मोबाइल पर अपना एक पैग़ाम भी मेरे नाम भेजा कि मैं पैग़ाम रिकार्ड करवाना चाहता हूँ। वह पैग़ाम वायरल भी हुआ है, इस का कुछ हिस्सा मैं सुना भी देता हूँ। इस पैग़ाम में जो उन्होंने मेरे नाम भेजा था, कहते हैं कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के रसूल हैं। अस्सलामो अलैकुम ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस्। मैं हर हफ़्ते एक-बार क़ुरआन--ए-क्रीम का मुकम्मल दौर करता हूँ और हर फ़ज्र के वक़्त में आपके लिए दुआ करता हूँ और हे ख़लीफ़ा! मेरी मदद करें मुझे बचाएं। मैं रुहानी मुश्किल मुसीबत और परेशानी में हूँ। फिर कहते हैं कि आपका हर हुक्म पूरा करता हूँ। और आगे फ़रमाया कि दुनिया को सच्च के सिवा क्या चाहिए। अल्लाह की राह में जिहाद यहां बहुत मुश्किल है लेकिन मैं इस के लिए डटा हूँ। मैंने 1948 ई. की जंग में हिस्सा लिया था। मैंने तीन सरहदी जंगों में कमांडर के तौर पर ख़िदमात अंजाम दी और सेना में बेघर हो गया था। मेरे वालिद एक मशहूर सूफ़ी थे और मेरे भाई मुहम्मद यह्या ग़ज़ा के चीफ़ जज थे। मेरे ख़ानदान में ऐसे अफ़राद भी हैं जो मुझे परेशान करते हैं, उनकी हिदायत और इस्लाह के लिए मेरे लिए दुआ करें। फिर कहते हैं इस ज़िला में मेरे पास सिर्फ चंद साथी हैं और फिर उन्होंने बाज़ों के नाम लिए कि वे मुझे बेटे की तरह अज़ीज़ हैं जिनमें एक नौजवान तारिक़ अबूदिय्या साहिब हैं। कहते हैं मेरी कोई औलाद नहीं है। फिर आगे दुआ देते हुए कहते हैं कि अल्लाह तआला आपको बरकत दे। मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ और मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ क़ियामत के दिन तक अल्लाह तआला से मुलाक़ात तक आप मेरी बैअत क़बूल फ़रमाएं अर्थात कि मैं अपनी बैअत की तजदीद करता हूँ और यक़ीन दिलाता हूँ कि मैं सच्चे दिल से अहमदी हूँ।

फिर वह कहते हैं कि अहमदिया अक़ीदा के सिवा मेरा कोई और अक़ीदा नहीं है। कुछ मुख़ालेफ़ीन ने कहा था कि यह अहमदी नहीं हैं यूंही अहमदी मशहूर कर रहे हैं लेकिन उनका यह रीकाड् वर्णन सामने है। इस के बाद शायद अब वह मुख़ालेफ़ीन चुप कर गए होंगे। अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी पत्नी को भी शिफ़ा दे। अल्लाह तआला उनकी दुआएं फ़लस्तीनियों के लिए भी क़बूल फ़रमाए और वहां अमन भी क़ायम फ़रमाए और उन लोगों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा है उसमान अहमद गाकोरिया साहिब ,कीनीया का है। उनकी वफ़ात भी पिछले दिनों हुई थी। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

उनकी जमाती ख़िदमात का सिल्सिला बहुत लंबा है, कई दहाईयों पर फैला हुआ है। 1932 ई. में ये पैदा हुए थे। साठ की दहाई में उनका जमाअत से परिचय हुआ। एक पुराने बुज़ुर्ग अरब अहमदी मरहूम सालिम अफ़ीफ़ साहिब के ज़रीया से उनको जमाअत का तआरुफ़ हुआ। इस के बाद आपने श्रीमान मौलाना रोशन दीन साहिब मुबल्लिग जमाअत के ज़रीया 1964 ई. में बैअत की और जमाअत में शमूलीयत इख़तेयार की और आख़िर तक इस अह्द बैअत को बड़ी ख़ुश-उस्लूबी से निभाया। महिकमा तालीम से वाबस्ता रहे। कीनीया की आज़ादी के कवाले (Kwale) पोलीटै-क्निक स्कूल के पहले मुक़ामी प्रिंसिपल निर्धारित हुए। इसी तरह एक दूसरे पोलीटैक्निक कॉलेज के पहले मुक़ामी प्रिंसिपल होने का एज़ाज़ भी आपको हासिल हुआ जिसका आप अक्सर वर्णन करते थे। महिकमा तालीम में ही आला ओहदे से रिटायर हुए। असंख्य जमाअती कुतुब का सवाहली भाषा में अनुवाद करने की सआदत मिली। नैरुबी जमात के पहले मुक़ामी सदर होने का भी एज़ाज़ आपको हासिल हुआ। इसी तरह कीनीया जमात के अव्वलीन मुक़ामी मूसियान में भी आपका शुमार होता है। मरहूम बहुत से उम्दा औसाफ़ के मालिक, एक अच्छे इन्सान थे। उम्र के आख़िरी हिस्सा तक नमाज़ तहज्जुद में बाक़ायदा थे। चंदाजात की अदायगी में कभी लापरवाई या सुसस्ती नहीं करते थे। मर्कज़ी मुबल्लग़ीन का आपके दिल में बहुत सम्मान था। अगर कोई अहमदी किसी मर्कज़ी मुबल्लिग के बारे में कोई ग़लत बात करता या शिकायत के रंग में कोई बात करता तो फ़ौरन उसे रोक देते बल्कि नाराज़गी और शदीद नापसं-दीदगी का इज़हार करते थे और हमेशा यह नसीहत करते थे देखो! आज तुम्हें ईमान की रोशनी से जो परिचित कराया है उन लोगों ने ही कराया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की जो तुम्हें तौफ़ीक़ मिली है वह उनकी वजह से मिली है अन्यथा तुम तो जहालत में पड़े हुए थे। इसलिए उन लोगों का तुम पर यह एहसान है और तुम्हारी नसलों पर भी एहसान है, इसलिए ऐसी बातें न किया करो। तो बहरहाल यह तो उनके अख़लाक़ थे।

हमारे मुबल्लग़ीन को भी, नए जाने वालों को भी अब चाहिए कि अपने भी वे आला मयार क़ायम करें कि मुक़ामी लोगों के लिए एक उदाहरण बनें।

इसी तरह मरहूम के अंदर मेहमान-नवाज़ी की सिफ़त भी बहुत ज़्यादा थी। आपकी तक़रीबन सारी औलाद जमाअत से जुड़ी हुई है और किसी न किसी रंग में जमाअती ख़िदमत की तौफ़ीक़ भी पा रही है। आपके एक बेटे अब्दुल अज़ीज़ गाकोरिया साहिब उस वक़्त सदर मजलिस अंसारुल्लाह हैं।

अल्लाह तआला उनसे रहम और मग़फ़िरत का व्यवहार फ़रमाए दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी औलाद को भी उनके नमूने पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

"इस्लाम के लश्कर को कुफ़्फ़ार पर फ़तह हासिल करने के बाद एक आरिज़ी पराजय का घाव इस लिए लगा कि उनमें से चंद आदमियों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिदायत पर अमल करने की बजाय अपने इजतेहाद से काम लेना शुरू कर दिया। अगर वे लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे उसी तरह चलते जिस तरह नब्ज़ हरकत-ए-क़लब के पीछे चलती है। अगर वे समझते कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक हुक्म के नतीजा में अगर सारी दुनिया को भी अपनी जानें क़ुर्बान करनी पड़ती हैं तो वह एक बे-हक़ीक़त वस्तु है। यदि वे ज़ाती इजतेहाद से काम लेकर इस पहाड़ी दर्रा को नहीं छोड़ते जिस पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें इस हिदायत के साथ खड़ा किया था कि ख़ाह हम फ़तह हासिल करें या मारे जाएं तुमने इस मुक़ाम से नहीं हिलना तो न दुश्मन को दुबारा हमला करने का अवसर मिलता और न मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो को कोई नुक़्सान पहुंचता।"

(हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो)

सुन लो उस ज़ात की क़सम जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हक़ के साथ भेजा है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक बालिशत भी पीछे नहीं हटे और वे दुश्मन के प्रतिद्वंद्वी रहे

अल्लाह तआला भी इस तरह हिफ़ाज़त फ़र्मा रहा था कि सफ़वान बिन उमय ने कहा कि मैं अल्लाह की क़सम खाता हूँ कि वह हम से महफ़ूज़ कर दिए गए। अल्लाह की क़सम हम चार लोग मक्का से निकले थे और उनके क़तल पर आपस में अह्द-ओ-पैमान किए लेकिन हम उन तक नहीं पहुंच सकें

"नबी बहादुरी की एक उदाहरण क़ायम करते हैं। ख़ुदा तआला को इस्लाम के साथ कोई दुश्मनी नहीं थी परंतु देखो जंग-ए-उहद में हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकेले रह गए। इस में यही रहस्य था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शुजाअत ज़ाहिर हो जबकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दस हज़ार के मुक़ाबिल में अकेले खड़े हो गए कि मैं अल्लाह तआला का रसूल हूँ। ऐसा उदाहरण दिखाने का किसी नबी को अवसर नहीं मिला।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"जंग-ए-उहद के वाक़िया की निसबत लोगों ने तावीलें की हैं परंतु असल बात यह है कि ख़ुदा की उस वक़्त जलाली तजल्ली थी और सिवाए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के और किसी को बर्दाश्त की ताक़त नहीं थी। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां ही खड़े रहे और बाकी अस्हाब का क़दम उखड़ गया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में जैसे इस सिदक़ और सच्चाई की उदाहरण नहीं मिलती जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुदा से था ऐसा ही इन अल्लाह की ओर से होने वाली सहायता की उदाहरण भी कहीं नहीं मिलती जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हैं।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

ग़ज़व-ए-उहद के दौरान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अद्वितीय बहादुरी, साबित क़दमी और साहस का वर्णन

श्रीमान डाक्टर मुहम्मद जलाल शमस साहिब मुरब्बी सिल्सिला और इंचार्ज टर्किश डैसक का वर्णन और तीन मरहूमीन श्रीमान मास्टर मुहम्मद इब्राहीम साहिब भाम्बड़ी (रब्वाह),श्रीमान यूसुफ़ इजारे साहिब (घाना) और श्रीमान अल्हाज उस्मान बिन आदम साहिब (घाना) का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 29 दिसम्बर 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आज जंग-ए-उहद की कुछ मज़ीद तफ़सीलात वर्णन करूँगा। जैसा कि वर्णन हुआ था कि दर्रा ख़ाली करने की वजह से कुफ़्फ़ार ने पीछे से हमला किया और जंग का पासा पल्टा। दुश्मन का हमला अत्यधिक भयानक था। इस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की साबित क़दमी और साहस और बहादुरी की उदाहरण क्या थी? इस बारे में विस्तार से लिखा है कि जब लड़ाई का पाँसा पलटने के बाद सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो बद-हवासी में अपने आपको सँभाल न सके और भगदड़ का शिकार हो गए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस भगदड़ में और अपने चारों तरफ़ दुश्मनों की भीड़ के बावजूद अपनी जगह डटे रहे और जमे रहे। सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो को घबराहट में इधर उधर भागते देख कर उन को पुकारते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते जाते थे। अमुक! मेरी तरफ़ आओ। हे अमुक! मेरी तरफ़ आओ। मैं ख़ुदा का रसूल हूँ। जबकि हर तरफ़ से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर तीरों की बोछार हो रही थी। एक रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बुलंद आवाज़ में फ़र्मा रहे थे।

اَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِب
اَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِب
اَنَا ابْنُ الْعَوَاتِكْ

मैं नबी हूँ इस में झूठ नहीं। मैं अब्दुल् मुतलिब का बेटा हूँ मैं अवातिक अर्थात आतिकाओं का बेटा हूँ। आम तौर पर रिवायात और सीरत की किताबों में है कि ये शब्द आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ज़वा हुनैन में फ़रमाए थे लेकिन बहरहाल दूर नहीं कि यही शब्द आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उहद में भी फ़रमाए हों और हुनैन में भी फ़रमाए हों।

(सीरतुल् हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 310 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

अवातिक का यहां वर्णन हुआ है। अवातिक आतिकः की जमा हैं और आतिकः

नाम की एक से अधिक महिलाएं थीं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गोत्र अर्थात नानियां दादियां थीं। एक तो आतिकः बिनत् हिलाल जो अब्दुल मुनाफ़ की माता थीं, दूसरी आतिकः बिंत मुर्रह जो हाशिम बिन अब्दे मुनाफ़ की वालिदा थीं, तीसरी आतिकः बिंत औकस जो वहब् अर्थात हज़रत आमना के वालिद की माँ थीं। एक रिवायत के मुताबिक़ ये नौ औरतें थीं। तीन बनू सुलेम में से और छः और लोगों में से थीं और सब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वंश से थीं।

(लुगात अल् हदीस भाग 3 पृष्ठ 97 नुमानी कुतुब ख़ाना लाहौर)

इस घटना विस्तारपूर्वक वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में लिखा है कि "जब अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथियों ने देखा कि अब तो फ़तह हो चुकी है तो उन्होंने अपने अमीर अब्दुल्लाह से कहा कि अब तो फ़तह हो चुकी है और मुस्लमान ग़नीमत का माल जमा कर रहे हैं आप हमको आज्ञा दें कि हम भी लश्कर के साथ जा कर शामिल हो जाएं। अब्दुल्लाह ने उन्हें रोका और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सख्त हिदायत याद दिलाई परंतु वह फ़तह की ख़ुशी में ग़ाफ़िल हो रहे थे' ये लोग "इस लिए वे बाज़ नहीं आए और यह कहते हुए नीचे उतर गए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का केवल ये मतलब था कि जब तक पूरा संतोष न हो यह दर्रा ख़ाली न छोड़ा जाए और अब चूँकि फ़तह हो चुकी है इस लिए जाने में कोई हर्ज नहीं है और सिवाए अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो और उन के पाँच सात साथियों के दर्रा की हिफ़ाज़त के लिए कोई नहीं रहा। ख़ालिद बिन वलीद की तेज़ आँख ने दूर से दर्रे की तरफ़ देखा तो मैदान साफ़ पाया जिस पर उसने अपने सवारों को जल्दी जल्दी जमा करके फ़ौरन दर्रे का रुख किया और इस के पीछे पीछे अकरमा बिन अबुजहल भी रहे सहे दस्ता को साथ लेकर तेज़ी के साथ वहां पहुंचा और ये दोनों दस्ते अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो और उन के चंद साथियों को एक आन की आन में शहीद कर के इस्लाम के लश्कर के अक़ब में अचानक हमला-आवर हो गए। मुस्लमान जो फ़तह के संतोष में ग़ाफ़िल और मुंतशिर हो रहे थे इस अचानक आने वाली विपत्ति से घबरा गए परंतु फिर भी सँभले और पलट कर कुफ़्फ़ार के हमला को रोकना चाहा। इस वक़्त किसी चालाक दुश्मन ने ये आवाज़ दी कि मुसलमानो! दूसरी तरफ़ से भी कुफ़्फ़ार का धावा हो गया है। अर्थात इस तरफ़ से हमला हो गया है। "मुस्लमानों ने व्याकुल हो कर फिर पल्टा खाया और घबराहट में बिना देखे समझे अपने आदमियों पर ही तलवार चलानी शुरू कर दी। दूसरी तरफ़ मक्का की एक बहादुर औरत अम्रा बिंत अल्कमा ने जब यह दृश्य देखा तो झट आगे बढ़कर क़ुरैश का झण्डा जो अभी तक ख़ाक में पड़ा था उठा कर ऊंचा कर दिया जिसे देखते ही क़ुरैश का बिखरा हुआ लश्कर फिर जमा हो गया। और इस तरह मुस्लमान वास्तव में चारों तरफ़ से दुश्मन के नरगा में घिर गए और इस्लामी फ़ौज में एक ख़तरनाक खलबली की सूरत पैदा हो गई।" इतना तो पहले भी वर्णन हो चुका है पिछले ख़ुतबा में कि किस तरह ये इकट्ठे हुए थे। किस तरह हमला हुआ था, झंडा किस ने उठाया। बहरहाल आगे जो है वह यह है कि इस वक़्त "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो एक बुलंद जगह पर खड़े हुए ये सब दृश्य देख रहे थे मुस्लमानों को आवाज़ पर आवाज़ दी परंतु इस शोर-शराबे में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आवाज़ दब-दब कर रह गई थी।

इतिहासकार लिखते हैं कि ये सब कुछ इतने थोड़े समय में हो गया कि अक्सर मुस्लमान बिल्कुल बदहवास हो गए। यहाँ तक कि इस बदहवासी में कुछ मुस्लमान एक दूसरे पर वार करने लग गए और अपने पराए में इमतेयाज़ न रहा।

इसलिए ख़ुद मुस्लमानों के हाथ से कुछ मुस्लमान ज़ख़मी हो गए' और जैसा कि पिछले ख़ुतबा में वर्णन हुआ था कि "और हुज़ैफ़ा के पिता यमान को तो मुस्लमानों ने ग़लती से शहीद ही कर दिया। हुज़ैफ़ा उस वक़्त क़रीब ही थे वे चलाते रह गए कि हे मुसलमानो यह मेरे वालिद हैं परंतु उस वक़्त कौन सुनता था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बाद में मुस्लमानों की तरफ़ से यमान का ख़ून बहा अदा करना चाहा परंतु हुज़ैफ़ा ने लेने से इंकार कर दिया और कहा कि मैं अपने बाप का ख़ून मुस्लमानों को माफ़ करता हूँ।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम. ए. रज़ियल्लाहु अन्हो पृष्ठ 491-492)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो इस वाक़िया को वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "एक तारीक घड़ी वह थी जबकि उहद में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ख़मी हुए और इस किस्म के वाक़ियात जमा हो गए कि इस्लाम के लश्कर की फ़तह पराजय की सूरत में तबदील हो गई। इस जंग में एक दर्रा ऐसा था जहां रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने बाअज़ आदमी चुन कर खड़े किए थे और उन्हें हुक्म दिया था कि जंग की ख़ाह कोई हालत हो तुमने उस दर्रा को नहीं छोड़ना। जब कुफ़्फ़ार का लश्कर बिखर गया तो उन्होंने ग़लती से इजतेहाद किया कि अब यहां ठहरने का क्या फ़ायदा है हम भी चलें और लड़ाई में कुछ हिस्सा लें। उनके सरदार ने उन्हें कहा भी कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हुक्म है कि हम यह दर्रा छोड़ कर न जाएं परंतु उन्होंने कहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह मतलब तो नहीं था कि फ़तह हो जाए तब भी यहीं खड़े रहो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद का तो यह मतलब था कि जब तक जंग होती रहे इस दर्रा को न छोड़ना। अब चूँकि फ़तह हो चुकी है दुश्मन भाग रहा है हमें भी तो कुछ सवाब जिहाद का हासिल करना चाहिए। इसलिए वह दर्रा ख़ाली हो गया। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो जो उस वक़्त तक अभी मुस्लमान नहीं हुए थे, नौजवान थे और उनकी निगाह बहुत तेज़ थी। वह जब अपने लश्कर समेत भागे जा रहे थे उन्होंने इत्तिफ़ाक़न पीछे की तरफ़ नज़र डाली तो दर्रा को ख़ाली पाया। ये देखते ही वह वापस लौटे और मुस्लमानों की पीठ पर हमला कर दिया। मुस्लमानों के लिए यह हमला चूँकि बिल्कुल ग़ैर मुतवक़्क़े था इस लिए उन पर सख़्त घबराहट तारी हो गई। और बाव्जाह बिखरे हुए होने के दुश्मन का मुक़ाबला न कर सके।"

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 9 पृष्ठ 76 से 77)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी रज़ियल्लाहु अन्हो सूरः नूर की आयत 64 की तफ़सीर में इस वाक़िया का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "जो लोग इस रसूल के हुक्म की मुख़ालेफ़त करते हैं उन्हें इस बात से डरना चाहिए कि कहीं उनको ख़ुदा तआला की तरफ़ से कोई आफ़त न पहुंच जाए। यह अनुवाद है इस आयत का "या वह किसी दर्दनाक अज़ाब में मुबतला न हो जाएं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं "इसलिए देख लो जंग-ए-उहद में इस हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की वजह से इस्लाम के लश्कर को कितना नुक़्सान पहुंचा।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक पहाड़ी दर्रा की हिफ़ाज़त के लिए पच्चास सिपाही निर्धारित फ़रमाए थे और यह दर्रा इतना अहम था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके अफ़्सर अब्दुल्लाह बिन जुबैर अंसारी को बुला कर फ़रमाया कि ख़ाह हम मारे जाएं या जीत जाएं तुमने उस दर्रा को नहीं छोड़ना परंतु जब कुफ़्फ़ार को पराजय हुई और मुस्लमानों ने उनका पीछा शुरू कर दिया तो उस दर्रा पर जो सिपाही निर्धारित थे। उन्होंने अपने अफ़्सर से कहा कि अब तो फ़तह हो चुकी है। अब हमारा यहां ठहरना बेकार है। हमें इजाज़त दें कि हम भी जिहाद में शामिल होने का सवाब ले लें। उनके अफ़्सर ने समझाया कि देखो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी न करो। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि ख़ाह फ़तह हो या पराजय तुम ने उस दर्रा को नहीं छोड़ना इस लिए मैं तुम्हें जाने की आज्ञा नहीं दे सकता।

उन्होंने कहा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह मतलब तो नहीं था कि चाहे फ़तह हो जाए फिर भी तुमने नहीं हिलना। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उद्देश्य तो सिर्फ ताकीद करना था। अब जबकि फ़तह हो चुकी है हमारा यहां क्या काम है? इसलिए उन्होंने ख़ुदा के रसूल के हुक्म पर अपनी राय को फ़ौक़ियत देते हुए इस दर्रा को छोड़ दिया। सिर्फ उनका अफ़्सर और चंद सिपाही बाक़ी रह गए। जब कुफ़्फ़ार का लश्कर मक्का की तरफ़ भागता चला जा रहा था तो अचानक ख़ालिद बिन वलीद ने पीछे की तरफ़ मुड़कर देखा तो दर्रा को ख़ाली पाया। उन्होंने अम्र बिन आस को आवाज़ दी। ये दोनों अभी तक इस्लाम में दाख़िल नहीं हुए थे और कहा देखो! कैसा अच्छा अवसर है आओ हम मुड़ कर मुस्लमानों पर हमला करें। इसलिए दोनों जरनैलों ने अपने भागते हुए दस्तों को सँभाला और इस्लाम के लश्कर का बाज़ू काटते हुए पहाड़ पर चढ़ गए। चंद मुस्लमान जो वहां मौजूद थे और जो दुश्मन का मुक़ाबला करने की ताक़त नहीं रखते थे उनको उन्होंने टुकड़े-टुकड़े कर दिया और इस्लाम के लश्कर पर पीछे से हमला कर दिया। कुफ़्फ़ार का यह हमला ऐसा अचानक था कि मुस्लमान जो फ़तह की ख़ुशी में इधर उधर फैल चुके थे उनके क़दम जम न सके। सिर्फ चंद सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो दौड़ कर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गर्द जमा हो गए जिनकी संख्या ज़्यादा से ज़्यादा बीस थी। परंतु ये चंद लोग कब तक दुश्मन का मुक़ाबला कर सकते थे। आख़िर कुफ़्फ़ार के एक रेले की वजह से मुस्लमान सिपाही भी पीछे की तरफ़ धकेले गए और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैदान-ए-जंग में तन-ए-तन्हा रह गए। इसी हालत में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कवच पर एक पत्थर लगा जिसकी वजह से कवच के कील आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिर में चुभ गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बेहोश हो कर एक गढ़े में गिर गए जो बाअज़ शरीरों ने इस्लाम के लश्कर को नुक़्सान पहुंचाने के लिए खोद कर ढाँप रखे थे। इस के बाद कुछ और सहाबा कराम

रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हुए और उनकी लाशें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र शरीर पर जा गिरीं और लोगों में यह मशहूर हो गया कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं। परंतु वे सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो जो कुफ़्फ़ार के रेले की वजह से पीछे धकेल दिए गए थे कुफ़्फ़ार के पीछे हटते ही फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट जमा हो गए और उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गढ़े में से बाहर निकाला। थोड़ी देर के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को होश आ गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चारों तरफ़ मैदान में आदमी दौड़ा दिए कि मुस्लमान फिर इकट्ठे हो जाएं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हें साथ लेकर पहाड़ के दामन में गए।

इस्लाम के लश्कर को कुफ़्फ़ार पर फ़तह हासिल करने के बाद एक अस्थाई पराजय का घाव इस लिए लगा कि उनमें से चंद आदमियों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिदायत पर अमल करने की बजाय अपने विचारों से काम लेना शुरू कर दिया।

अगर वे लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे इसी तरह चलते जिस तरह नब्ज़ हरकत-ए-क़लब के पीछे चलती है। अगर वे समझते कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक हुक्म के नतीजा में अगर सारी दुनिया को भी अपनी जानें क़ुर्बान करनी पड़ती हैं तो वे एक बे-हक़ीक़त वस्तु है। यदि वे ज़ाती इजतेहाद से काम लेकर इस पहाड़ी दर्रा को न छोड़ते जिस पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें इस हिदायत के साथ खड़ा किया था कि ख़ाह हम फ़तह हासिल करें या मारे जाएं तुमने इस मुक़ाम से नहीं हिलना तो न दुश्मन को दुबारा हमला करने का अवसर मिलता और न मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो को कोई नुक़्सान पहुंचता।"

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 6 पृष्ठ 410-411)

अतः अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुमने हुक्म उदूली की तो नुक़्सान उठाया। यह उसका नतीजा था।

फिर एक और जगह भी हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने बड़ी लतीफ़ तफ़सीर फ़रमाई है। सुरः कौसर की बड़ी तफ़सीली तफ़सीर है जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाई। इस में भी इस वाक़िया का वर्णन फ़रमाया कि "जंग-ए-उहद के अवसर पर मुस्लमानों को ख़ुदा तआला ने फ़तह दी और कुफ़्फ़ार भाग गए। ख़ालिद बिन वलीद और अम्र बिन आस जो इस्लाम के अज़ीमुश्शान जरनैल गुज़रे हैं अभी इस्लाम नहीं लाए थे और इस जंग में कुफ़्फ़ार की तरफ़ से शामिल थे। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के एक गिरोह को एक दर्रा में खड़ा किया और उन्हें सख्त हुक्म दिया कि तुमने उस जगह से नहीं हिलना ख़ाह हमें फ़तह हो या पराजय। हम मारे जाएं या ज़िंदा रहें तुमने उस जगह को नहीं छोड़ना। मुस्लमानों में जिहाद का बड़ा जोश था और अब भी है। जब इस्लाम को फ़तह हासिल हुई तो जो लोग इस दर्रे पर खड़े थे उन्होंने अपने अफ़्सर से कहा कि हमें भी थोड़ा बहुत जिहाद में हिस्सा लेने की इजाज़त दें। इस्लाम को फ़तह हासिल हो गई है और अब कोई ख़तरा बाक़ी नहीं रहा। उसने कहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया था कि ख़ाह फ़तह हो या पराजय। हम मारे जाएं या ज़िंदा रहें उस जगह से न हिलें। इस लिए हमें यहीं रहना चाहिए। उन्होंने कहा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह मतलब तो नहीं था कि ख़ाह फ़तह हो जाए तब भी यहां से नहीं हटना। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो हमें एहतियातन यहां खड़ा कर दिया था। दुश्मन अब भाग गया है और इस्लाम को फ़तह हासिल हो गई है। अब इस में कोई हर्ज नहीं कि हम इस जगह को छोड़ दें और जिहाद में थोड़ा बहुत हिस्सा ले लें। अफ़्सर ने कहा और बड़ी हिक्मत की बात की अफ़्सर ने। कहते हैं "अफ़्सर ने कहा कि जब हाकिम हुक्म दे देता है तो साथ अधीन कार्य करने वालों को यह हक़ नहीं होता कि वे अपनी अक़्ल को दौड़ाए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें फ़रमाया था कि यहां से नहीं हिलना। चाहे फ़तह हो या पराजय। हम मारे जाएं या ज़िंदा रहें और ताकीद फ़रमाई थी कि इस जगह को न छोड़ा जाए। इस लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिदायत के मुताबिक़ हमें यहीं ठहरना चाहिए। परंतु उन्होंने यह बात नहीं मानी और अपनी ग़लती पर उन्होंने इस क़दर इसरार किया कि अपने अफ़्सर से कहा। आप ठहरे रहें हम तो जाते हैं। इसलिए अक्सर उनमें से चले गए। केवल अफ़्सर और इसके चंद साथी बाक़ी रह गए। जब कुफ़्फ़ार का लश्कर भागा। ख़ालिद बिन वलीद बड़े ज़हीन और होशयार थे। इस्लाम में भी आपने शानदार काम किए हैं और कुफ़्फ़ार में भी आप बड़े पाया के जरनैल थे। आप जब अपने लश्कर के साथ भागे जा रहे थे तो अचानक उनकी निगाह उस दर्रा पर पड़ी और वे ख़ाली नज़र आया। आपके साथ अम्र बिन आस भी थे। आपने अम्र से कहा हमें आला दर्जा का अवसर मिल गया है। अम्र ने भी इस तरफ़ देखा और दोनों अपना अपना दस्ता लेकर वापस लौटे। ख़ालिद बिन वलीद ने एक तरफ़ से चक्कर लगा कर दर्रा पर हमला किया और अम्र बिन आस ने दूसरी तरफ़ से। और दर्रा पर जो चंद आदमी मौजूद थे उनको मार कर उन्होंने मुस्लमानों पर पुश्त की तरफ़ से हमला कर दिया। मुस्लमान इस दर्रा की तरफ़ से अपने आपको महफ़ूज़ समझते थे और तित्र बित्तर हो चुके थे। सफ़ें टूट चुकी थीं और बच्चे कुचे दुश्मन का पीछा कर रहे थे जब ख़ालिद बिन वलीद और अम्र बिन आस ने उनकी पीठ पर हमला किया तो अकेला--अकेला मुस्लमान पूरे दस्ता के सामने आ गया। कुछ मुस्लमान मारे गए और कुछ ज़ख़मी हो गए और बाकियों के पांव उखड़ गए विशेषता जब हमला करते करते दुश्मन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक पहुंचा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास उस वक़्त केवल बारह आदमी थे। इन दोनों जरनैलों अर्थात ख़ालिद बिन वलीद और अम्र बिन आस ने अपने दूसरे अफ़सरों को भी इत्तिला कर दी थी कि तुम भी हमला करदो। इसलिए तीन हज़ार का लश्कर रेला करते हुए आ गया। उस वक़्त दुश्मन की तरफ़ से पथराओ हो रहा था। तीर बरस रहे थे। तलवारें चल रहीं थीं और समस्त इस्लाम के लश्कर में एक भगदड़ और खलबली मची हुई थी। ऐसी हालत में सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने बेनज़ीर क़ुर्बानियां कीं परंतु तीन हज़ार के ता-ज़ा-दम लश्कर के सामने वे ताब न ला सके।

इस हमले में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दो दाँत भी टूटे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कवच में भी एक पत्थर लगा जिसकी वजह से कवच का एक कील आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिर में धँस गया जिस से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बेहोश हो कर एक गढ़े में गिर गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जो सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो खड़े थे उनकी लाशें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऊपर आ पढ़ीं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पवित्र शरीर नीचे छिप गया और मुस्लमानों में शोर मच गया कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं। मुस्लमानों के क़दम पहले ही उखड़े हुए थे इस ख़बर ने उनके रहे सहे औसान भी ख़ता कर दिए परंतु अल्लाह तआला की हिक्मत कि जब कुफ़्फ़ार में यह ख़बर प्रसिद्ध हुई कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मारे जा चुके हैं तो उसके बाद उन्होंने मज़ीद हमला न किया बल्कि यही मुनासिब समझा कि अब जल्दी मक्का को लूट चलें और लोगों को यह ख़ुशख़बरी सुनाईं कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मारे जा चुके हैं।"

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 10 पृष्ठ 340 से 341अल्कोसर : 2)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बहादुरी और साबित क़दमी के बारे में रिवायात में यूं वर्णन है। मिक्दाद बिन अम्र ने उहद के दिन का वर्णन करते हुए वर्णन किया कि अल्लाह की क़सम! मुशरेकीन ने क़तल किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बहुत ज़ख़म पहुंचाए।

सुन लो उस ज़ात की क़सम जिस ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हक़ के साथ भेजा है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक बालिशत भी पीछे नहीं हटे और वे दुश्मन मद्देमुकाबिल रहे।

और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो की एक जमाअत एक मर्तबा आपकी तरफ़ लोटती और फिर हमला के ज़ोर से जुदा हो जाती। अर्थात कुफ़्फ़ार का जब हमला होता तो सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो तित्र बित्तर हो जाते और फिर लौटते। अतः कभी आप खड़े हो कर अपनी कमान से तीर फेंकते और पत्थर फेंकते यहां तक कि मुशरेकीन को दूर कर देते और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो की एक जमाअत के साथ साबित-क़दम रहे।

एक रिवायत में यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी जगह साबित-क़दम रहे। एक क़दम भी पीछे नहीं हटे बल्कि दुश्मन के समक्ष मुक़ाबला करते रहे और अपनी कमान से उन पर तीर बरसाते रहे यहां तक कि उस का तांत टूट गया और उस का एक टुकड़ा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ में रह गया जो एक बालिशत का होगा। जिसमें तीर फंसा कर खींचते हैं वह टूट गया। तो उकाशा बिनत् मेहसन ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कमान लीताकि उस की तांत लगा दें तो उसने

कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तांत पूरा नहीं हो रहा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस को खींचो पूरा हो जाएगा। उकाशा कहते हैं कि उस ज़ात की क़सम जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हक़ के

साथ भेजा है मैंने उस को खींचा तो वह पूरा हो गया और मैंने कमान की लक्कड़ी पर उस के दो या तीन बल दिए। या तो पूरा नहीं हो रहा था या फिर एक मोजिज़ा सा हो गया कि पूरा भी हो गया।

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी कमान थाम ली और तीर बरसाते रहे और अबू तल्हा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ढाल बन कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ढाँपे हुए थे यहां तक कि कमान टूट कर टुकड़े-टुकड़े हो गई और उस के तीर ख़त्म हो गए तो कमान कतादा बिन नुमान ने ले ली और वह कमान हमेशा उनके पास रही और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पत्थर फैंकने लगे।

नाफ़े बिन जुबैर वर्णन करते हैं कि मैंने मुहाजेरीन में से एक शख़्स को यह कहते हुए सुना कि मैं उहद में शरीक हुआ था। मैंने देखा कि हर जानिब से तीर आ रहे हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके दरमयान में हैं। सारे तीर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दूर हो जाते थे और मैंने अब्दुल्लाह बिन शहाब ज़ुहरी को देखा कि वह उस दिन कह रहा था कि तुम मेरी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ राहनुमाई करो अगर वे बच गए तो मैं नहीं बचूँगा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के पहलू में थे। उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ कोई नहीं था। जब वे आगे निकल गया तो

सफ़वान बिन अमय ने उस को मलामत की। उसने कहा अल्लाह की क़सम मैंने तो उन को नहीं देखा। अल्लाह तआला भी इस तरह हिफ़ाज़त फ़र्मा रहा था। मैं अल्लाह की क़सम खाता हूँ कि वह हमसे महफ़ूज़ कर दिए गए। अल्लाह की क़सम हम चार लोग मक्का से निकले थे और उनके क़तल पर आपस में अह्द-ओ-पैमान किए लेकिन हम उन तक नहीं पहुंच सके।

इब्ने साद कहते हैं कि अबू नम्र किनानी ने कहा मैं मुशरेकीन के साथ उहद में शरीक हुआ और मैंने उस दिन पाँच निशाने बना रखे थे उन पर अपने तीर बरसाता था। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ देखता रहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को घेरे हुए थे और तीर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दाएं बाएं गिर रहे थे। कुछ तीर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने गिर जाते थे कुछ पीछे गिर जाते थे फिर अल्लाह तआला ने मुझे इस्लाम की हिदायत दी। बाद में ये मुस्लमान हो गए।

(उद्धारित सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 196-197 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मक्की ज़िंदगी एक अजीब उदाहरण है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बहादुरी का वर्णन करते हुए आप फ़र्मा रहे हैं "और एक पहलू से सारी ज़िंदगी ही तकलीफ़ात में गुज़री। जंग-ए-उहद में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकेले ही थे। लड़ाई में हुज़ूर अलैहिस्सलाम का अपनी निसबत रसूलुल्लाह ज़ाहिर करना आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की किस दर्जा की शौकत, साहस और इस्तिक़ामत को है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 309 ऐडीशन 1984 ई.)

ऐसे दुश्मनों में घिरे हुए थे तब भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह नहीं छुपाया कि मैं नहीं हूँ बल्कि ऐलान कर दिया। लोगों को पता लग गया। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "अंबिया और औलिया के लिए तकलीफ़ इस किस्म की नहीं होती जैसी कि यहूद को लानत और ज़िल्लत हो रही है जिस में अल्लाह तआला के अज़ाब और उस की नाराज़गी का इज़हार है बल्कि अनबया शुजाअत का एक नमूना क़ायम करते हैं। ख़ुदा तआला को इस्लाम के साथ कोई दुश्मनी नहीं थी परंतु देखो जंग-ए-उहद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकेले रह गए। इस में यही भेद था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बहादुरी ज़ाहिर हो जबकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दस हज़ार के मुक़ाबिल में अकेले खड़े हो गए कि मैं अल्लाह तआला का रसूल हूँ। ऐसा नमूना दिखाने का किसी नबी को अवसर नहीं मिला।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 172-173 ऐडीशन 2022 ई.)

यह अख़बार के लिखने वाले ने लिखा है। क्योंकि यहां उहद में तो तीन हज़ार की संख्या थी। हो सकता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दो जंगों का वर्णन किया हो। जंग-ए-अहज़ाब में भी दस हज़ार लोग कुफ़्फ़ार थे और दूसरी जंगों में भी दुश्मनों की काफ़ी संख्या थी। बहरहाल असल चीज़ जो आप साबित फ़र्मा रहे हैं वह है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बहादुरी और उदाहरण जब कुफ़्फ़ार के सामने भी अकेले खड़े हो गए। ऐसा नमूना दिखाने का किसी नबी को अवसर नहीं मिला।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "ख़ुदा तआला क़ादिर है कि जिस शैय में चाहे ताक़त भर देवे। अतः अपने दीदार वाली ताक़त उसने अपनी गुफ़्तार में भर दी है। अंबिया ने इसी गुफ़्तार पर ही तो अपनी जानें दे दी हैं। क्या कोई मजाज़ी आशिक़ इस तरह कर सकता है? इस गुफ़्तार की वजह से कोई नबी इस मैदान में क़दम रख कर फिर पीछे नहीं हटा और न कोई नबी कभी बेवफ़ा हुआ है। अर्थात कि जब दावा किया है तो दावा पर फिर क़ायम रहते हैं।

"जंग-ए-उहद के वाक़िया की निसबत लोगों ने तावीलें की हैं परंतु असल बात यह है कि ख़ुदा की उस वक़्त जलाली तजल्ली थी और सिवाए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के और किसी को बर्दाश्त की ताक़त नहीं थी इस लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां ही खड़े रहे और बाकी अस्हाब का क़दम उखड़ गया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में जैसे इस सिदक़ और सफ़ा की नज़ीर नहीं मिलती जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुदा से था ऐसा ही इन अल्लाह की सहायता की नज़ीर भी कहीं नहीं मिलती जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हैं।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 268 ऐडीशन 2022 ई.)

यह इन शा अल्लाह बाक़ी आगे वर्णन करूँगा। इस वक़्त पहले तो एक ज़िक्र-ए-ख़ैर हमारे देरीना ख़ादिम-ए-सिल्सिला, मुरब्बी सिल्सिला, मुबल्लिग सिल्सिला डाक्टर मुहम्मद जलाल शमस का करना चाहता हूँ। उनका जनाज़ा तो मैंने कल पढ़ा दिया था लेकिन वर्णन मैं चाहता था कि जुमा पर भी कर दूं। एक काबिल, लायक़ और सादा और वफ़ादार वाकिफ-ए-ज़िंदगी थे। पिछले दिनों उनकी उनासी 79 वर्ष की उम्र में वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

1969 ई. में जामिआ से शाहिद की डिग्री उन्होंने अच्छे नंबरों से हासिल की और कुछ अरसा पाकिस्तान में मुख़्तलिफ़ जगहों पर काम किया। फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस के इरशाद पर तुर्की ज़बान सीखने के लिए पाकिस्तान में इस्लामाबाद भिजवा दिए गए। फिर तुर्की ज़बान में आला तालीम के लिए 1974 ई. में उनको तुर्की भिजवाया गया जहां से उन्होंने तुर्की ज़बान में पी. एच.डी की डिग्री अच्छे नंबरों में हासिल की और फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला के इरशाद पर यू.के (UK) आए। यहां आपको बर्तानिया और फिर जर्मनी में बतौर मुबल्लिग सिल्सिला ख़िदमात बजा लाने की तौफ़ीक़ मिली। इसलिए आपको जानने वाले जो मुख़्तलिफ़ लोग लिख रहे हैं वे तुर्की से भी हैं और जर्मनी से भी, यू.के से भी हैं। काफ़ी बड़ा उनका हल्क़ा-ए-अहबाब था और वाक़फ़ियत थी। बहरहाल इसके बाद बर्तानिया में उनको इंचार्ज तुर्की डैसक निर्धारित किया गया और देहांत के अंत तक इस ओहदा पर निहायत इख़लास और मेहनत से ख़िदमत बजा लाते रहे। कमाल दर्जा की ज़हानत और विवेक से अल्लाह तआला ने उनको नवाज़ा। तुर्की में आप ने जब तरकिश भाषा की डिग्री हासिल की तो इस्तंबोल यूनीवर्सिटी ने आपको प्रोफ़ैसर के तौर पर जॉब की आफर की और अच्छी जॉब थी, तनख़्वाह भी ग़ैरमामूली थी। आपने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला से इस सिल्सिला में राहनुमाई चाही तो हुज़ूर ने यह नहीं कहा कि कर लो या न करो बल्कि उन्होंने फ़रमाया कि आप ही दुआओं के साथ फ़ैसला करो और सोच समझ कर फ़ैसला करो कि तुम क्या चाहते हो। तब आपने दुआ की और अल्लाह तआला के हुज़ूर अपने वक़्फ़ को फ़ौक़ियत दी और इस जॉब स्ए इंकार कर दिया। 2002 ई. में तुर्की के एक दौरे के दौरान तुर्की में आपको दो साथियों के साथ इस्लाम अहमदियत की तब्लीग़ के जुर्म में क़ैद कर लिया गया और साढ़े चार माह आपको जेल की भी सआदत प्राप्त हुई।

आपके अहम कारनामों में अपने साथियों के साथ क़ुरआन-ए-क्रीम का तुर्की भाषा में अनुवाद भी शामिल है। इस के इलावा दर्जनों कुतुब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अनुवाद करने और दीगर बहुत से तर्बीयती, तब्लीग़ी पमफ़्लेटस, ट्रेक्ट और कुतुब तरकिश भाषा में लिखने और शाय करने की भी तौफ़ीक़ मिली। आप इलमी शख़्सियत थे, पुस्त कोंके अध्यन का शौक़ था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और खलिफ़ा की कुतुब और खिताबात का बहुत बारीकबीनी से अध्यन करते। कुतुब पर ही नोटिस लेते रहते थे। जमाअती कुतुब के अतिरिक्त ग़ैर जमाती मुख़्तलिफ़ उलूम-ओ-फ़नून की कुतुब पढ़ने का भी शौक़ रखते थे। बहुत दूरदर्शी शख़्सियत थे और दोस्तों और अज़ीज़ों से भी जो इलमी बातचीत करते तो इस में बड़ी बारीकी से नुक्ते वर्णन करते। जहां मुश्किल पेश आती या जब उनको समझ नहीं आती थी तो यह नहीं था कि किसी किस्म का तकब्बुर हो बल्कि जूनीयर मुरब्बीयान से भी राहनुमाई लेते थे।

शेष भाग अगले अंक में ...

अंक 5 , पृष्ठ 12 में प्रकाशित हुए ख़ुत्बः का शेष भाग

... उद्देश्य लड़ाई हुई और बहुत सख़्त हुई और काफ़ी वक़्त तक ग़लबा का पहलू मशकूक रहा। लेकिन आख़िर ख़ुदा के फ़ज़्ल से क़ुरैश के पांव उखड़ने लगे और उनके लश्कर में बदनज़मी और अबतरी के आसार ज़ाहिर होने लगे। क़ुरैश के झंडे उठाने एक-एक करके मारे गए और उनमें से तक़रीबन नौ शख़्सों ने बारी-बारी अपने क़ौमी झंडे को अपने हाथ में लिया परंतु सारे के सारे बारी-बारी मुस्लमानों के हाथ से क़तल हुए।" जैसा कि तफ़सील में वर्णन हुआ है। "आख़िर तल्हा के एक हब्शी ग़ुलाम सवाब नामी ने दिलेरी के साथ बढ़कर इल्म अपने हाथ में ले लिया परंतु इस पर भी एक मु-स्लमान ने आगे बढ़ कर वार किया और एक ही मार में उसके दोनों हाथ काट कर क़ुरैश का झंडा ख़ाक पर गिरा दिया लेकिन सवाब की बहादुरी और जोश का भी यह आलम था कि वे भी उस के साथ ही ज़मीन पर गिरा और झंडे को अपनी छाती के साथ लगा कर उसे फिर बुलंद करने की कोशिश की परंतु इस मुस्लमान ने जो झंडे के सिर झुकाने की कदरों कीमत को जानता था ऊपर से तलवार चलाकर सवाब को वहीं ढेर कर दिया। इस के बाद फिर क़ुरैश में से किसी शख़्स को यह जुर्रत और हिम्मत नहीं हुई कि अपने इल्म को उठाए। उधर मुस्लमानों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हुक्म पाकर तकबीर का नारा लगाते हुए फिर ज़ोर से हमला किया और दुश्मन की रही सही सफ़ों को चीरते और मुंतशिर करते हुए लश्कर के दूसरे पार क़ुरैश की औरतों तक पहुंच गए और मक्का के लश्कर में सख़्त भागड़ पड़ गई और देखते ही देखते मैदान क़रीबन साफ़ हो गया। यहाँ तक कि मुस्लमानों के लिए ऐसी काबिल-ए-इतमीनान सूरत-ए-हाल पैदा हो गई कि वे माल-ए-ग़नीमत के जमा करने में व्यस्त हो गए।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ा-दा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम. ए. रज़ियल्लाहु अन्हो पृष्ठ 488 से 491)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया है कि "लड़ाई हुई और अल्लाह तआला की मदद और नुसरत से थोड़ी ही देर में साढ़े छः सौ मुस्लमानों के मुक़ाबला में तीन हज़ार मक्का के अनुभवी सिपाही सिर पर पांव रखकर भाग गए।

मुस्लमानों ने उनका पीछा शुरू किया तो उन लोगों ने जो पुश्त के दर्राह की हिफ़ाज़त के लिए खड़े थे उन्होंने अपने अफ़्सर से कहा अब तो दुश्मन को पराजय हो चुकी है अब हमें भी जिहाद का सवाब लेने दिया जाए। अफ़्सर ने इनको इस बात से रोका और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात याद दिलाई परंतु उन्होंने कहा रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो कुछ फ़रमाया था केवल ताकीद के लिए फ़रमाया था अन्यथा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुराद यह तो नहीं हो सकती थी कि दुश्मन भाग भी जाए तो यहां खड़े रहो। यह कह कर उन्होंने दर्राह छोड़ दिया और मैदान-ए-जंग में कूद पड़े।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 249)

और यह न-फ़रमानी की वजह से फिर बाद में जो नतायज ज़ाहिर हुए उनका वर्णन भी आगे होगा।

अबू दुजाज रज़ियल्लाहु अन्हो की तलवार के बारे में जिस तरह विलियम मियोर ने लिखा है। इस की तफ़सील में भी लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलवार लेकर उसका हक़ अदा करने वाले सहाबी कौन थे?

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं इस बारे में कि रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उहद के दिन एक तलवार पकड़ी और फ़रमाया। مَنْ يَّأْخُذُ مِنِّيْ هٰذَا कि उसे मुझ से कौन लेगा? तो सबने अपने हाथ बढ़ाए और उनमें से हर एक ने कहा मैं मैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर फ़रमाया فَمَنْ يَّأْخُذُهٗ بِحَقِّهٖ कि कौन उसको इसके हक़ के साथ लेगा? हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं इस पर लोग रुक गए तो हज़रत सिमाक बिन ख़रशा अबू दुजाज रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मैं इस को उस के हक़ के साथ लेता हूँ। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि उन्होंने तलवार ली और मुशरिकों के सिर फाड़ दिए। अर्थात उसका हक़ अदा किया। (सही मुस्लिम, किताब फ़ज़ायल अल्सहाबा, बाब मिन फ़ज़ायल अबी दुजाना हदीस 6353) यह सही मुस्लिम की रिवायत है।

इब्ने उत्बा ने लिखा है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तलवार दिखाई तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस को तलब किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आ'राज़ किया। पहले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मांगने की कोशिश की फिर हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मांगी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आ'राज़ क्या, उनको भी नहीं दी। तो इन दोनों ने इस से दिल में अफ़सोस किया और एक रिवायत में है कि ज़ुबैर ने तीन मर्तबा तलवार मांगी। हर दफ़ा नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आ'राज़ किया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने खड़े हो कर मुतालिबा किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बैठ जाओ। (सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 192 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत) उनको भी नहीं दी।

एक रिवायत में आता है कि इस अवसर पर जिन असहाब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस ख़ाहिश का इज़हार किया कि वे तलवार उनको इनायत की जाए उनमें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे।

(शरह ज़रक़ानी बहग 2 पृष्ठ 404 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

एक रिवायत में आता है कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उसको हक़के साथ कौन प्रयोग करेगा

अबू दुजाज रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा उसका हक़ क्या है? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

इससे किसी मुस्लमान को क़तल न करना और इसके होते हुए किसी काफ़िर के मुक़ाबले पर न भागना। यानी डट के मुक़ाबला करना।

इस पर हज़रत अबू दुजाज रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया। मैं इस तलवार को उसके हक़ के साथ लेता हूँ। जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू दुजाज रज़ियल्लाहु अन्हो को तलवार दी तो उन्होंने उस से मुशरेकीन के सिर फाड़ दिए। उन्होंने इस अवसर पर ये अशआर पढ़े कि :

أَنَا الَّذِيْ عَاهَدَنِيْ خَلِيْلِيْ
وَنَحْنُ بِالسَّفْحِ بِصَفَا لَدَى النَّخِيْلِ
أَنْ لَّا أَقُوْمَ الدَّهْرَ فِي الْكَيُوْلِ
أَضْرِبُ بِسَيْفِ اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ

मैं वह हूँ जिससे मेरे दोस्त ने वादा लिया है जबकि हम सफ़ा मुक़ाम पर खजूर के दरख़्तों के पास थे और वह वादा यह है कि मैं लश्कर की पिछली सफ़ों में न खड़ा हूँ और अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलवार से दुश्मनों से लड़ाई करूँ।

बहरहाल हज़रत अबू दुजाज रज़ियल्लाहु अन्हो यह लेकर फिर बड़ी तफ़ाख़ुराना चाल चलते हुए लश्कर की सफ़ों के मध्य चलने लगे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया إِنَّ هٰذِهٖ مِشْيَةٌ يُبْغِضُهَا اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ إِلَّا فِيْ هٰذَا الْمُقَامِ कि यह ऐसी चाल है जो सर्व शक्तिमान अल्लाह को नापसंद है सिवाए इस मुक़ाम के अर्थात जंग के अवसर पर।

(अल् असाबा भाग 7 पृष्ठ 100 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(ओसोदुल् गाबा भाग 2 पृष्ठ 317 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

यह जिस तरह चल रहे हैं हज़रत अबू दुजाज रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन करते हुए सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है कि मुबारिज़त में जब कुफ़्फ़ार क़ुरैश को हज़ीमत उठानी पड़ी तो कुफ़्फ़ार ने यह नज़ारा देखा तो ग़ज़ब में आकर हमला कर दिया। मुस्लमान भी तकबीर के नारे लगाते हुए आगे बढ़े और दोनों फ़ौजें आपस में गुत्थम गुत्था हो गईं। शायद इसी अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी तलवार हाथ में लेकर फ़रमाया कौन है जो इसे लेकर उसका हक़ अदा करे? बहुत से सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस फ़ख़र की ख़ाहिश के लिए अपने हाथ फैलाए जिनमें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो बल्कि कुछ रिवायत की दृष्टि से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो भी शामिल थे। परंतु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना हाथ रोके रखा और यही फ़रमाते गए। कोई है जो इस का हक़ अदा करे? आख़िर अबू दुजाना अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और अर्ज़ किया। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुझे इनायत फ़रमाईए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह तलवार उन्हें दे दी और अबू दुजाना अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो उसे हाथ में लेकर बड़े घमंड की चाल से, बड़े अकड़ते हुए फ़ख़र के साथ कुफ़्फ़ार की तरफ़ आगे बढ़े। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा कराम रज़ियल्ला-हु अन्हो से फ़रमाया : ख़ुदा को यह चाल बहुत नापसंद है परंतु ऐसे अवसर पर नापसंद नहीं। ज़ुबैर जो ग़ालिबन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलवार लेने के सबसे ज़्यादा ख़ाहिशमंद थे और करीब का रिश्ता की वजह से अपना हक़ भी ज़्यादा समझते थे दिल ही दिल में पेचोताब खाने लगे कि क्या वजह है कि आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे तलवार नहीं दी और अबू दुजाना को दे दी है और अपनी इस परेशानी को दूर करने के लिए उन्होंने दिल में अह्द किया कि मैं इस मैदान में अबू दुजाना के साथ साथ रहूँगा और देखूंगा कि वह इस तलवार के साथ क्या करता

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 08 February 2024 Issue No. 6

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

है। इसलिए वह कहते हैं कि अबू दुजाना ने अपने सिर पर एक सुर्ख़ कपड़ा बाँधा और इस तलवार को लेकर हमद के गीत गुनगुनाता हुआ मुशरेकीन की सफ़ों में घुस गया और मैं ने देखा कि वह जिधर जाता था गोया मौत बिखेरता जाता था और मैंने किसी आदमी को नहीं देखा जो उसके सामने आया हो और फिर वह बचा हो। यहाँ तक कि वह लश्कर क़ुरैश में से अपना रास्ता काटता हुआ लश्कर के दूसरे किनारे निकल गया जहां क़ुरैश की औरतें खड़ी थीं। हिंद पत्नी अबू सुफ़ियान जो बड़े ज़ोरशोर से अपने मर्दों को जोश दिला रही थी उसके सामने आई और अब्बू दुजाना ने अपनी तलवार उसके ऊपर उठाई। जिस पर हिंद ने बड़े ज़ोर से चीख़ मारी और अपने मर्दों को इमदाद के लिए बुलाया परंतु कोई शख़्स उस की मदद को नहीं आया लेकिन मैंने देखा कि अबू दुजाना ने ख़ुदबख़ुद ही अपनी तलवार नीची करली और वहां से हट आया। ज़ुबैर रिवायत करते हैं कि इस अवसर पर मैंने अबू दुजाना से पूछा कि यह क्या माजरा है कि पहले तुमने तलवार उठाई और फिर नीची कर ली। उसने कहा मेरा दिल इस बात पर तैयार नहीं हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलवार एक औरत पर चलाऊं और औरत भी वह जिसके साथ उस वक़्त कोई मर्द मुहाफ़िज़ नहीं। यह है इस्लामी जंग का उसूल ज़ुबैर कहते हैं कि मैंने उस वक़्त समझा कि वास्तव में जो हक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलवार का था वह उसने अदा किया।

(उद्धारित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम. ए रज़ियल्लाहु अन्हो पृष्ठ 489-490)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस अवसर का वर्णन फ़रमाया कि एक सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के पूछने पर कि इस औरत पर तलवार उठा कर फिर उसे क़तल क्यों न किया? तो इस पर अबू दुजाना ने कहा कि मेरे दिल ने बर्दाश्त न किया कि मैं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दी हुई तलवार को एक कमज़ोर औरत पर चलाऊं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि :

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम औरतों के अदब और सम्मान की हमेशा तालीम देते थे जिसकी वजह से कुफ़्फ़ार की औरतें ज़्यादा दिलेरी से मुस्लमानों को नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश करती थीं।

इस बात से भी पता लगता है कि क्यों यह वाक़िया हुआ। इसलिए हुआ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम औरतों के सम्मान की तालीम देते थे और औरतें उसकी वजह से फिर ज़्यादा दिलेर हो गई थीं और नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश करती थीं परंतु फिर भी मुस्लमान इन बातों को बर्दाश्त करते चले जाते थे।

(उद्धारित तफ़सीर-ए-कबीर भाग 2 पृष्ठ 421- 422)

अतः यह हैं इस्लामी जंगों के उसूल इन शा अल्लाह बाक़ी आगे।

फ़लस्तीनियों के लिए भी दुआएं करते रहीं। ज़ुलम की इंतेहा दिन-ब-दिन होती चली जा रही है, बल्कि बढ़ती चली जा रही है। अल्लाह तआला अब ज़ालिमों की पकड़ के सामान करे और मज़लूम फ़लस्तीनियों के लिए भी आसानियां पैदा फ़रमाए। मुस्लमान देशों को भी अक़ल और समझ दे कि उनकी आवाज़ एक हो और वे मुस्लमान भाईयों के लिए उनका हक़ अदा करने के लिए कोशिश करने वाले हों।

★ ★ ★

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें

(1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़ीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3) अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगें उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलिखित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पारः अनुवाद सहित चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित। (30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकातुद-दुआ, दीनी मालूमात जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़्म (शान-ए--इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडीयेट के मयार के अनुसार (10+2) (20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार (दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न) (20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) (10 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थीयों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपने रहने का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। बाद में रहने के संबंध में किसी निवेदन पर कोई कारवाई नहीं होगी। (9) सफ़र ख़र्च क़ादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा। (नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

★ ★ ★

सदर अंजुमन अहमदिया, अंजुमन तहरीक-ए-जदीद, अंजुमन वक़्फ़-ए-जदीद क़ादियान के विभाग में बतौर ग्रेड दर्जा चहारुम बराए माली/केयरटेकर/चौकीदार/बावर्ची/नानबाई के लिए शर्तें

(1) अभ्यर्थी की आयु 40 वर्ष से ज़ायद और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की तालीम की कोई शर्त नहीं है जबकि पढ़े लिखे अभ्यर्थी को प्राथमिकता दी जाएगी। (3) जन्म प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना ज़रूरी होगा। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगी उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) वही अभ्यर्थी ख़िदमत के लिए जाऐंगे जो मर्कज़ी कमेटी बराए भर्ती कारकुनान के इंटरव्यू में सफल होंगे। (6) इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल के तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के मुताबिक़ सेहतमंद और तंदरुस्त होंगे। (7) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपनी रिहायश का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। (8) क़ादियान आने जाने का सफ़र ख़र्च अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।
(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।
नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान पिन कोड 143516
मोबाइल : 09682627592, 09682587713, दफ़्तर01872-501130
E-mail: diwan@qadian.in

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad